IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

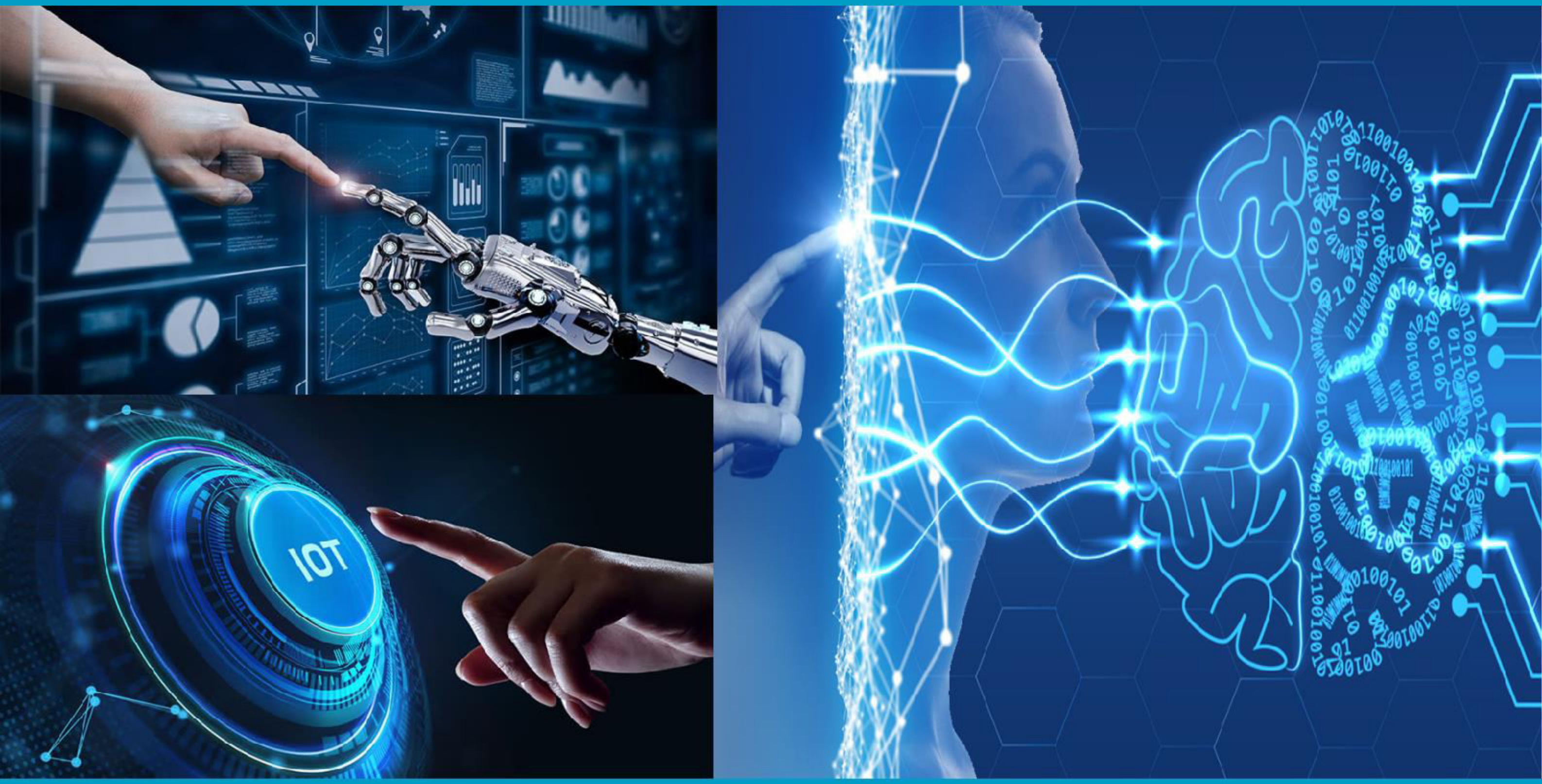


# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

## IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 9, September 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

# आधुनिक उपन्यासों में टूटते हुए मानवीय संबंध

**Dr. Shriram Barkodia**

Associate Professor in Hindi, Government College, Jaipur, Rajasthan, India

**सार**

आधुनिक उपन्यास की चर्चा करते समय विषय को मुख्यतया अँग्रेज़ी उपन्यास तक ही सीमित रखना विश्व-साहित्य में उपन्यास के विकास को एकांगी रूप देना है और स्वयं अँग्रेज़ी उपन्यास को भी अधूरा देखना है क्योंकि, विशेषतया उत्तरकाल में वह दूसरी भाषाओं के साहित्यों और साहित्यिक आंदोलनों से अत्यधिक प्रभावित होता रहा है। फिर भी, जहाँ तक हिंदी उपन्यास का प्रश्न है उसकी गतिविधि बहुत-कुछ अँग्रेज़ी उपन्यास के समानांतर ही रही और दूसरी साहित्यों का, यथा रूसी और फ्रांसीसी साहित्यों का प्रभाव उसने अँग्रेज़ी के माध्यम से ही ग्रहण किया। इसके अतिरिक्त हिंदी-पाठक अँग्रेज़ी साहित्य से न्यूनाधिक मात्रा में परिचालित होता ही है और इतर साहित्य का ज्ञान न इतना विस्तृत होता है, न इतना व्यवस्थित। इसलिए उपन्यास-संबंधी साधारण स्थापनाओं के उदाहरण देने के लिए अँग्रेज़ी साहित्य को सामने रखना कदाचित् अधिक उपयोगी होगा। वास्तव में डिकेंस और थैकरे को ही आधुनिक उपन्यास के आदि-प्रवर्तक माना जा सकता है। लेकिन फिर भी आधुनिक उपन्यास उनके उपन्यासों से बिल्कुल भिन्न है, जैसा कि हम अभी देखेंगे। विक्टोरियन उपन्यास के विकास का दूसरा चरण ऐंटर्नी ट्रालॅप, जॉर्ज इलियट और मेरेडिथ में लक्षित होता है। ट्रॉलॅप को थैकरे का अनुयायी माना जा सकता है यद्यपि वह स्वयं एक अच्छा उपन्यासकार था। तथापि यह भी कहा जा सकता है कि वह उपन्यासकार का उत्तम उदाहरण था क्योंकि वह शुद्ध उपन्यासकार था, ऐसा उपन्यासकार नहीं जो साथ-साथ कवि या आलोचक या समाज-शास्त्री या सुधारक भी हो। उसके लिए मुख्य बात कहानी कहना था। युवक और युवतियों के मनोरंजन के लिए साधारण जीवन का ऐसा चित्र जिसमें हास्य का पुट, करुणा की मिठास हो, वह ट्रॉलॅप के उपन्यास की परिभाषा है। उसके उपन्यासों में चरित्र के मनोविश्लेषण का अनुपात कुछ अधिक था। लेकिन फिर भी उसकी मूल प्रवृत्ति समाज-चित्रण की ही थी। स्वभाव से वह परंपरावादी था और धार्मिक तथा नैतिक रूढ़ियों की ओर उसकी प्रवृत्ति सहज स्वीकार की ही थी। जॉर्ज इलियट, मेरेडिथ और हेनरी जेम्स मुख्यतया चरित्र का विश्लेषण करते थे। जॉर्ज इलियट, अपने समकालीनों की अपेक्षा अधिक बौद्धिक थी। नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह तो उसमें नहीं था तथापि परंपरागत धर्म-विश्वास पर उसे संदेह था। वह ईसाई नीति-शास्त्रों को मानती और उसकी रक्षा करना चाहती थी लेकिन साथ ही उसे आधिदैविक या अति-प्राकृतिक आधारों से अलग भी करना चाहती थी। मेरेडिथ में दार्शनिक जिज्ञासा का भाव और उभर कर आया। वह जॉर्ज इलियट की अपेक्षा कहीं अधिक मौलिक विचारक था, जीवन के तथा धर्म के गंभीरतम प्रश्नों के प्रति सजग और उचितानुचित, पाप-पुण्य आदि की समस्याओं में उलझा हुआ। जिन प्रश्नों को थैकरे ने अपने समाजालोचना में कभी छुआ भी न था उन्हें मेरेडिथ मुख्य रूप से सामने लाता था। मेरेडिथ ने ही पहले-पहल समकालीन तथा विक्टोरियन उपन्यास की अपर्याप्तता घोषित की और जीवन-दर्शन की आवश्यकता पर जोर दिया। "यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि यदि हम शीघ्र ही उपन्यास में जीवन-दर्शन का समावेश नहीं करते, तो वह कला अपने बहुसंख्यक उपासकों के रहते हुए भी नष्ट हो जाएगी।

तीसरा चरण विक्टोरियन समाज के विघटन का समय है और इस चरण के उपन्यासों में जिज्ञासाएँ तीव्र हो उठती हैं। दूसरी ओर इस काल के लेखक में भाषा की अलंकृति भी बहुत देखी जाती है। इस चरण के मुख्य और महान उपन्यासकार थॉमस हार्डी हैं। मेरेडिथ ने जिन समस्याओं को सूचित ही करके छोड़ दिया था। हार्डी उनकी गंभीरता से आतंकित हो उठता है। वह समस्याओं को ही गंभीर और विचारपूर्ण ढंग से उपस्थित नहीं करता बल्कि उनके सुलझाने या उत्तर की ओर भी संकेत करता है। 'टेस' में पतिता नारी के जीवनाधिकार का प्रश्न उठाया गया है। 'जूड द ऑब्सक्योर' में समाज के अंदर व्यक्ति की समस्याओं को उठाया गया है। लेकिन हार्डी की आलोचना को सामाजिक नहीं कहा जा सकता, वह जागतिक (कॉस्मिक) ही है क्योंकि उनका आक्रोश समकालीन समाज-व्यवस्था की रूढ़ियों के प्रति नहीं, समूचे जीवन-विधान के प्रति है। उसके अनुसार एक ओर मानव प्राणी है जो अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और आयोजनों को समझता है; दूसरी ओर जड़ प्रकृति है जिसमें न चेतनता है, न विवेक। इस प्रकार

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

मानवीय प्रवृत्तियाँ तो बोधगम्य है लेकिन घटनाक्रम तर्कातीत और विसंगत है। जड़ जगत का संगठन विवेकपूर्ण नहीं है। मानव और प्रकृति का यह विरोध, मानवीय उद्योग और विधि के विधान का यह वैषम्य या असंगति ही मानव की ट्रेज़ेडी का मूल है।

हार्डी का साहित्य लोक-परंपरा और लोक-विश्वासों पर निर्भर करता हुआ चलता है। लोक-गाथा, लोक-कला, लोक-विश्वास और लोक-धर्म उसके साहित्य में इतना महत्त्व रखते हैं कि उपन्यास को विशिष्ट प्रदेश और उस प्रदेश की लोक-परंपरा से पृथक करके पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

हार्डी को 'अंतिम विक्टोरियन' कहा जाता है। लेकिन उसे इतनी बड़ी सार्थकता के साथ 'अंतिम एलिज़ाबीथन' भी कहा जा सकता है। क्योंकि हार्डी शेक्सपियर के साहितय में डूबा हुआ है और शेक्सपियर का या एलिज़ाबेथ कालीन नाटककारों का प्रभाव उसके साहित्य में स्पष्ट लक्षित होता है। उदाहरणतया हार्डी के देहाती पात्र शेक्सपियर के पात्रों से बहुत-कुछ मिलते हैं, वही पार्थिवता और यही काव्यमयता उनमें होती है। इसी प्रकार दैव संयोग (कोइंसिडेंस) और हास्य का वैसा ही उपयोग हार्डी में है जैसा कि एलिज़ाबेथ कालीन नाटक में। वैचित्र्य और वैषम्य का एलिज़ाबेथ कालीन आकर्षण हार्डी को भी आकृष्ट करता है। 'रिटर्न ऑफ़ द नेटिव' के अंशो की तुलना वेब्स्टर के 'द व्हाइट डेविल' से और 'मेयर ऑफ़ कास्टरब्रिज' की तुलना शेक्सपियर के 'किंग लियर' से की जा सकती है।

हार्डी का समकालीन एक उपन्यासकार अँग्रेज़ी उपन्यास की परंपरा में विशेष स्थान रखते हुए भी प्रायः उपेक्षित होता रहा है; वह है जॉर्ज गिसिंग। इसका कारण कुछ तो हाडी का नैकट्य हो सकता है, कुछ यह कि गिसिंग की सत्यवादिता में एक रूखापन और कटुता है। वास्तव में गिसिंग 'मोह-भंग' का पहला उपन्यासकार है। शैली और विधान की दृष्टि से यद्यपि वह परंपरानुगामी है, तथापि वस्तु की दृष्टि से वह भविष्योन्मुखी है; रुमानी प्रभावों से मुक्त, स्पष्टवादी, धार्मिक और राजनीतिक मान्यताओं के विषय में संदेहवादी। गिसिंग ने इसका तीव्र अनुभव किया कि उपन्यास को अपना विस्तार नए वर्गों और नई गहराईयों में ले जाना चाहिए। 'अनक्लास्ड' (वर्गच्युत) नामक उपन्यास में वह कहता है, "रोजमर्रा जीवन का उपन्यास अब घिस गया है। अब हमें और गहरे खोदना होगा और अछूते सामाजिक स्तर तक पहुँचना होगा। इसका अनुभव डिकेंस ने किया था लेकिन उसमें अपने विषय का सामना करने का साहस नहीं था।

गिसिंग के इस मोह-भंग में नए अथवा आधुनिक उपन्यास का बीज निहित है। विक्टोरिया के युग के बाद एडवर्ड का काल केवल एक अंतराल है; विक्टोरियन से परिवर्तन वास्तव में प्रथम विश्व युद्ध में ही आया, जिसने सहसा भारी उथल-पुथल कर दी और नए उपन्यास को जन्म दिया। आधुनिक उपन्यास वास्तव में युद्धोत्तकाल का उपन्यास है। यह दूसरी बात है कि उसके बीज, जैसा ऊपर बताया गया है पूर्ववर्ती कुछ उपन्यासों में ही निहित थे और आधुनिक उपन्यास की परंपरा का विवेचन बिना विक्टोरियन युग में इन प्रवृत्तियों के मूल-स्रोतों को पहचाने हो ही नहीं सकता।

विक्टोरियन उपन्यास मध्यवर्ग का, मध्यवर्ग की भावना का, बुर्जुआ संस्कृति का उपन्यास था। उसका विकास इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के समांतर चला, किंतु विश्व-युद्ध ने बुर्जुआ जगत को जड़ से हिला दिया। उसकी संस्कृति लड़खड़ा कर टूट गई। उसके प्रतिमान सहसा संदिग्ध हो उठे :

सभी मानवीय संबंध परिवर्तित हो गए हैं स्वामी और भृत्य के, पति और पत्नी के, माता-पिता और संतति के। और जब मानव-संबंधों में परिवर्तन आता है तब धर्म, आचार, राजनीतिक और साहित्य में भी साथ-साथ परिवर्तन होता है।" (वर्जिनिया वूल्फ़)

साहित्यकार की दृष्टि अब वर्गों के संघर्ष को स्पष्ट देखने लगी। इतना ही नहीं, उसने देखा कि वर्गों के जीवन के वृत्त के भीतर भी अनेक दरारें पड़ गई हैं, वर्ग-संघर्ष के भीतर जातियों या घरानों के एक अलग संघर्ष की लीकें पहचानी जा सकती है। महायुद्ध ने मध्यवर्ग के जीवन को तो हिलाया ही, घरानों के जीवन पर भी गहरा आघात किया। महायुद्ध की चपेट में एक समूची युवा पीढ़ी को खोकर ये मध्यवर्गीय घराने अपने भविष्य की अनिश्चितता से आतंकित हो उठे क्योंकि युवा पीढ़ी के मिट जाने से उनकी संपत्ति का उत्तराधिकार और कुल का स्थायित्व ज़ोखिम में पड़ गया। संपत्ति-मात्र खतरे में है, यह दुश्चिंता मध्यवर्गीय जीवन को घुन-सी खाने लगी।

गाल्सवर्दी और किपलिंग इस संकट के उपन्यासकार हैं। गाल्सवर्दी के 'फ़्रोइट सागा' की उपन्यास-परंपरा घरानों के जीवन के विस्फोट का ही चित्र है। मैंने 'ऑफ़ प्रॉपर्टी' का नाम ही अभिप्राय-भरा है और 'प्रॉपर्टी' की रक्षा की व्याकुलता गाल्सवर्दी के पात्रों का मुख्य मनोभाव है : वर्गीय या कुलगत मर्यादाओं की रक्षा का आग्रह संपत्ति-संबंधी उस चिंता का ही प्रक्षेपण है।

वर्जिनिया वूल्फ़ और गाल्सवर्दी-किपलिंग में एक बड़ा अंतर है : ये दोनों उपन्यासकार बुर्जुआ उपन्यासकार हैं किंतु वर्जिनिया वूल्फ़ बूर्जुआ नहीं है, यद्यपि उसे बुर्जुआ-विरोधी भी नहीं कहा जा सकता। उसकी बौद्धिकता और सूक्ष्म अनुभूति उसे इससे ऊपर उठाते हैं। प्रतिमानों के बुर्जुआ होते हुए भी उसका दृष्टिकोण अधिक बौद्धिक और उसकी संवेदना का वृत्त अधिक विस्तृत है।

इसके अनंतर जो महत्त्वपूर्ण नाम सामने आता है और इस नाम के साथ अँग्रेज़ी उपन्यास संक्रांति-काल पार करके 'आधुनिक' युग में आ जाता है, वह डी. एच. लॉरेंस का है। लॉरेंस स्पष्टतया बुर्जुआ -विरोधी था। अपने युग की वह एक अद्‌भुत अनमिल उपज था।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

उसका दृष्टिकोण रुमानी था, परंतु बुर्जुआ -विरोधी क्योंकि उसमें एक नास्तिक अभिजात्य था। उनकी चरमवादी प्रवृत्ति इस बनी-बनाई घटिया दुनिया को सह नहीं सकती थी। उसका विद्रोह इस 'रेडी मेड' बुर्जुआ मानदंडों के प्रति उसका अस्वीकार एक अनीश्वरवादी या सर्वदेवतावादी (पैगन) की स्वच्छंदता की घोषणा थी। भौतिक जीवन के साथ चेतना का एक ऐसा नया संबंध स्थापित करने के लिए जो बूर्जुआ जीवन के ओछेपन से बंधा हुआ न हो, उसकी अभिजात मनोभावना संसार की सभी मानी हुई संस्कृतियों का तिरस्कार करके उनके घेरे से बाहर जाने को तैयार थी। ग्रीक, यहूदी, रोमी, मध्ययुगीन, पुनरुत्थान कालीन सभी संस्कृतियों को अपर्याप्त पाकर लॉरेंस नई खोज के लिए कहीं भी जाने को आतुर था।. भूली हुई प्राक्-सभ्यताओं की ओर भी "आई वॉन्ट टू टर्न माई बैक ऑन द होल ब्लास्टेज पास्ट" मैं समूचे अभागे अतीत की ओर पीठ फेर लेना चाहता हूँ, यह लॉरेंस की उक्ति थी; और यूरोप को छोड़कर वह मेक्सिको गया था तो संवेदना के किसी पुराने अर्द्ध-विस्मृत प्रकार की खोज में। मेक्सिको-विषयक अपने उपन्यास 'द प्लम्ड सर्पेंट' में वह लिखता है: "मैं मूलभूत भौतिक यथार्थताओं के प्रति संवेदना का पुनःसंस्कार करना चाहता हूँ।

विक्टोरियन काल की प्रवृत्तियाँ लॉरेंस के परवर्ती युग में भी लक्षित होती हैं, और लॉरेंस के पूर्वसूचक विक्टोरियन युग में थे; पर लॉरेंस से स्पष्ट युग परिवर्तन माना जा सकता है। इस ऐतिहासिक अवलोकन के बाद अब इसपर विचार किया जा सकता है कि आधुनिक उपन्यास की कौन-सी प्रवृत्तियाँ उसे विक्टोरियन उपन्यास से पृथक करती हैं।

1. जो है उसके प्रति, समवर्ती नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक मूल्यों के प्रति, अस्वीकार और नए प्रतिमानों की प्रतिष्ठा की आकुलता, यही वह मौलिक भेद है जो विक्टोरियन और आधुनिक का काल-विभाजन करता है। नए प्रतिमानों और मूल्यों की यह खोज लॉरेंस और ट्रॉलॅप की तुलना करने से स्पष्ट उभरकर सामने आती है। लॉरेंस सर्वथा आधुनिक है, ट्रॉलॅप संपूर्णतया विक्टोरियन। दोनों का न केवल मुहावरा भिन्न है वरन् अनुभूति-क्षेत्र ही अलग-अलग है।

नए मूल्यों की खोज को लॉरेंस भावना के और काम-संबंधों के क्षेत्र में भी ले जाता है। उसके पात्र अभूतपूर्व हैं। उनमें हम उनकी चेतना से पृथक उनकी संवेदनाओं का प्रवाह और आदान-प्रदान देखते हैं। चेतन भावनाओं और अचेतन संवेदनाओं के स्तर अलग-अलग हैं, दोनों में तीव्रता और प्रवाह है। लॉरेंस के पात्रों का भाव-जीवन उतना ही गतिमय है जितना हेनरी जेम्स के पात्रों का बुद्धि-जीवन : "जानना रक्त से होता है, केवल मन से नहीं" डी. एच. लॉरेंस। दोनों में ऐंद्रिय संवेदनाओं का वर्णन करने और उन्हें पाठक तक पहुँचाने की असाधारण क्षमता थी और दोनों ने उपन्यास की पहुँच और गहराई को बढ़ाया।

जेम्स जॉयस अंशतः ही आधुनिक है। भाषा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में उसके प्रतिमान आधुनिक हैं, किंतु उसकी नैतिक और सामाजिक मान्यताएँ कैथलिक हैं। इसी प्रकार एल्डस हक्सले और वर्जिनिया वूल्फ़ भी संपूर्णतया आधुनिक नहीं हैं क्योंकि वे केवल कुछ ही क्षेत्रों में नए प्रतिमान खोजते या चाहते हैं, और ऐसे क्षेत्रों में पुराने प्रतिमानों को ही मानते चलते हैं। हक्सले ने प्रायः ऐसे समाज या काल का चित्रण किया है जिसमें कोई प्रतिमान ही नहीं हैं; कोई ऐसे आधार ही नहीं हैं जिनपर कर्म या आचार की कसौटी हो सके। 'पाएंट काउंटरपाएंट' में लॉरेंस के पथ की ओर थोड़ा-सा झुकाव है, किंतु अनंतर हक्सले रहस्यवादी या आध्यात्मिक अन्वेषण की ओर झुक जाता है, जिसके प्रथम संकेत 'दोज़ बैरन लीव्स' में मिलते हैं और अधिक विकसित रूप 'आइलेस इन गाजा' में और 'टाइम मस्ट हैव ए स्टॉप' में। इस दृष्टि से हक्सले वास्तव में अर्ध-आधुनिक भी नहीं, छद्म आधुनिक ही है। नए मूल्यों की खोज ने जो अनेक दिशाएँ ग्रहण की, उनमें कुछ का संक्षेप में निरूपण कर देना अनुचित न होगा :

(क) धर्म और नीति के क्षेत्र में मानववाद, करुणा के आदर्श की पुनः प्रतिष्ठा।

(ख) सहज बोध बनाम बुद्धिमन के विरुद्ध 'रक्त' का सहारा।

(ग) समाज-संगठन के क्षेत्र में बूर्जुआ सामाजिक ढाँचे का तिरस्कार, घरानों और परिवारों के जीवन का विघटन।

(घ) काम-संबंधों के क्षेत्र में सेक्स की नई परिभाषा, जो उसे न निरा शरीर-संबंध मानती है, न केवल सामाजिक बंधन या व्रत, बल्कि एक 'गतिशील-सम्पृक्त भाव' (डाइनैमिक कम्यूनिकेशन) ।

2. आधुनिक विज्ञान के आविष्कारों ने जो नई समस्याएँ खड़ी कर दी हैं उनके कारण जो अवस्था उत्पन्न हुई है, वह आधुनिक उपन्यास की दूसरी विशेषता है।

वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव को नई दृष्टि दी है, पर उसके कारण हमारी मान्यताओं में और उनके आधारों में जो परिवर्तन आते हैं उन्हें हम पूर्णतया स्वीकार नहीं कर सके हैं, जीवन और आचार में आत्मसात करना तो दूर की बात है। ज्ञान और आचार की अवस्थाओं में यह विपर्यय अनेक समस्याएँ और संघर्ष उत्पन्न करता है जो आधुनिक जीवन का एक मूलभूत सत्य है और जिनका प्रभाव आधुनिक उपन्यासकार पर पड़ना अनिवार्य है। मार्क्सवाद इन समस्याओं का निराकरण नहीं करता। यह जीवन का एक वैज्ञानिक जड़वादी आधार उपस्थित करना चाहता है, पर यह आधार अपर्याप्त है और इसलिए असह्य हो उठता है। यह नहीं कहा जा सकता कि आधुनिक उपन्यासकार ने विज्ञान को जीवन का आधार मान लिया

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

निःसंदेह कई नए उपन्यासकार दावा करते हैं कि हमारी संवेदनाएँ बिल्कुल बदल गई हैं और उनका आधार संपूर्णतया वैज्ञानिक है, पर वास्तव में यह दावा निराधार है। यह तो ठीक है कि वे डी. एच. लॉरेंस से भिन्न है, पर कालाकार के रूप में वे कुंठित है और अपनी मान्यताओं के ढाँचे के अंदर असंतोष और कुंठा का अनुभव भी करते रहते हैं। डी. एच. लॉरेंस का आमूल विद्रोह या नकारात्मक आग्रह उनका नहीं है, उसे वे भ्रांत मानते है; पर स्वयं शांति या स्थिरता पाने में वे असमर्थ हैं। काव्य में मायाकोवस्की, या उपन्यास में ऐरेनबुर्ग इसके अच्छे उदाहरण हैं। स्वयं अपनी मान्यता और अपने जीवन का अंतर्विरोध उन्हें बेचैन कर देता है, यह बेचैनी और उदभ्रांति उनकी रचना में अभिव्यक्त होती है। भिन्न-भिन्न कारणों से उत्पन्न यह उदभ्रांति क्या मार्क्सिस्ट लेखकों में और क्या अन्य लेखकों में, आधुनिक उपन्यास की विशेषता है।

आधुनिक उपन्यासकार वर्तमान परिस्थिति या परिवेश को अस्वीकार करता है किंतु नए स्तर पर किसी परिवेश का स्वीकार या उसके साथ समन्वय की स्थापना नहीं कर पाया। इससे जो शून्य उत्पन्न होता है, वह आधुनिक उपन्यास का एक विशेष लक्षण है। आधुनिक उपन्यास नया उपन्यास है, लेकिन उसका नयापन न तो विषय-वस्तु का नयापन है, न विधान का, न कथानक का, न रूपाकार का; वह मूलतः जीवन के प्रति दृष्टिकोण का नयापन है। यद्यपि वस्तु, शैली, विधान, कथा आदि का नयापन उसमें हो सकता है और होता भी है, तथापि उसकी आधुनिकता की कसौटी वह नहीं है, कसौटी उसका नया दृष्टिकोण ही है।

3. समय या काल के प्रश्न को लेकर आधुनिक उपन्यासकार की व्यस्तता कदाचित् उसके विज्ञान-संबंधी ऊहापोह का ही एक पहलू है।काव्य में टी.एस. इलियट और गद्य में वर्जिनिया वूल्फ़ बार-बार 'अतीत की वर्तमानता' की बात करते हैं; वर्जिनिया वूल्फ़ के लिए व्यक्ति का संपूर्ण जीवन ही 'अतीत की खोज' है। उसका एक चरित्र-नायक ऑर्लैंडो तीन सौ वर्ष तक जीता है; एलिज़ाबेथ के युग में वह बच्चा है, तीस वर्ष की आयु में वह पोप के युग में प्रवेश करता है और सन् 1929 में अभी वृद्धावस्था को प्राप्त नहीं हुआ है। किसी ने इसे 'आइन्स्टाइन के सिद्धांत का काव्य रूप' कहा है। एल्डस हक्सले भी काल के प्रश्न को लेकर व्यस्त है। इसके संकेत उसके प्रारंभिक उपन्यासों में भी मिलते हैं, और 'टाइम मस्ट हैव से स्टॉप' का शीर्षक (यद्यपि वह हैमलेट की उस उक्ति से लिया गया है) इस व्यस्तता को स्पष्ट प्रकट करता है। किंतु यह आधुनिक उपन्यास का एक अपेक्षया कम महत्त्वपूर्ण पहलू है। वास्तव में उसकी वास्तविक कसौटी उसका दृष्टिकोण ही है। यही उसे पूर्ववर्ती उपन्यास से पृथक करता है, और उसे समझने के लिए इसके ऐतिहासिक विकास और कारणों का समझना आवश्यक है। जैसा कि हम पहले कह आए, विक्टोरियन प्रवृत्तियाँ आधुनिक युग तक भी चली आती हैं, और आधुनिक प्रवृत्तियों के बीच पूर्ववर्ती युग में पाए जाते हैं; तथापि दोनों युगों का अंतर इतना स्पष्ट है कि उसके बारे में भूल हो नहीं सकती, और यह भी समझ में आ जाता है कि दृष्टिकोण के इस आमूल परिवर्तन के बाद फिर पीछे लौटना असंभव है, भले ही पाठकों को विक्टोरियन उपन्यास अधिक रोचक लगते रहें, जैसा कि वे निःसंदेह अनेकों को लगते हैं। यह परिवर्तन एक प्रौढ़ता का द्योतक है जिससे पीछे नहीं लौटा जा सकता। और किसी को क्यों लौटना चाहिए, इसका कारण कम-से-कम कोई आधुनिक तो नहीं सोच सकता।

## परिचय

मूल्य मानव के जीवन को पूर्ण विकास की ओर अग्रसर करते हैं। इसके लिए मानव को अपने जीवन के लिए उचित उद्देश्य निर्धारित करने की आवश्यकता है। मूल्य अत्यंत आधारभूत होते हैं। जिसे मानव अनुभव करता है कि यह जीवन में कितने आवश्यक होते हैं। मानव मूल्यवान है। मूल्य जैसे कि मानव का जीवित रहना, मानव संतुष्टि, मानव सुख-शांति और एक स्वस्थ मानव।[1]

"मूल्य" शब्द अँग्रेज़ी शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया गया है। प्रतिदिन के व्यवहार में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रकार से विभिन्न अर्थों में किया जाता है। विज्ञान के इस युग में मानव मूल्यों का विघटन हो रहा है; यांत्रिक सभ्यता ने मनुष्य की इस मूल्य दृष्टि को परिवर्तित कर दिया है अथवा परिस्थितियों के साथ जीवन-मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है- समय, स्थान, स्थिति के अनुसार इसका अर्थ बदलता रहता है- पाल हान्ले फर्मे के अनुसार "किसी वस्तु की मानवीय आकांक्षाओं को पूरी करने वाली विश्वस्त योग्यता, किसी वस्तु का यह गुण जो व्यक्ति के समूह के लिए उसे रुचिकर बनाता है।"[1] वस्तु का महत्व एवं उपयोगिता पर बल दिया गया है। डॉ. देवराज ने कहा है कि "मनुष्य द्वारा जिन वस्तुओं की कामना की जाती है,[2] उसे ही मूल्यवान माना जाता है।"[2] मानव मूल्यों का केंद्र माना जाता है। इस आधार पर विवेचन करें तो समकालीन लेखकों ने अपने उपन्यासों में मानव-मूल्यों की स्पष्टता का महत्व स्वीकार किया है। सामाजिक, सांस्कृतिक,आर्थिक और धार्मिक तथा अन्य मूल्यों का विकास-क्रम परिवेश के अनुसार विकसित किया है।[3] उपन्यास 'क्योंकि' में लेखिका शशिप्रभा शास्त्री ने कहा है कि सामाजिक परंपराओं,रूढ़ियों के बदलते स्वरूप को देखते हुए निरंतर परिवर्तन आ रहा है। बेरोजगारी के कारण युवा अपने पथ से हट अनेक विसंगतियों में फँसता जा रहा है- "थके टूटे अनपढ़ जाहिल गंदे मैले कुचैले ये बहशी युवक देश के भविष्य के कर्णधार, युवकों के नाम पर हड्डी या फसफस हुई देहें,जुआ-चोरी-जारी,लूटपाट जैसे खुरापाती लतों को पाले हुए,छुरे-पिस्तौल के

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

बल पर शक्ति समेटे ये युवक अपना क्षोभ दिखाते हुए,जबरन दूसरों के अधिकारों पर कब्जा करने वाले इन युवकों की एक बड़ी भीड़ देश के हर भाग में फैली हुई है।[4] इनका वातावरण इनसे क्या नहीं करवाता होगा ? क्या होगा इस देश का?"[3] समाज की स्थिति-परिस्थिति के बदल जाने से व्यक्ति का अस्तित्व ही बदल गया है। रोज़गार न मिलने के कारण व्यक्ति अपना एव देश का हित भी नहीं समझ रहा है। मानव विकास की ओर अग्रसर न होकर पतन की ओर चला जा रहा है। समाज एवं परिस्थिति व्यक्ति से न जाने क्या-क्या करवा लेती है पता ही नहीं चलता।[5]

समाज जैसे-जैसे बदल रहा है व्यक्ति की सोच में भी परिवर्तन आता जा रहा है। पहले शादी घर-परिवार की रज़ामंदी से तय की जाती थी। आज मूल्यों में परिवर्तन होने से शादी बड़ों की मर्जी से ना करके अपनी पसंदाअनुसार करना चाहते है।[6] लेखिका शशिप्रभा शास्त्री ने इस संबंध पर व्यंग्य कसते हुए कहा है "आपके बच्चे लव मैरिज कर ले तो बात जुदा है,तब तो आपके वश की बात नहीं है, उस समय भी आप यह ज़रूर चाहेंगी,जहाँ तक मैं सोचती हूँ कि भले ही बच्चे कैसी शादी कर लें, पर अगर आपने उसे शादी के लिए अपनी सहमति दे दी है, उसे स्वीकार कर लिया है[7], तो आप चाहेंगे कि आपके बच्चे की शादी अपने ढंग से हो"।[4] सोच बदलने के कारण रीति-रिवाजों, परंपराओं में परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। बच्चों की सोच के अनुसार ही आप अपनी रज़ामंदी दे देते हैं, तो समाज में आपकी प्रतिष्ठा अनुसार विवाह संपन्न कर पायेगें। आज की युवा पीढ़ी अपनी सोच के अनुसार आगे बढ़ना चाहती है।[8] विवाह करने की समस्या का चित्रण है, तो कहीं समय पर विवाह न करने की त्रासदी को लेखिका शिवानी के अपने उपन्यास 'चौदेह फेरे' में उठाया गया है। आर्थिक समस्या से ग्रस्त युवा पीढ़ी अपनी ज़िम्मेदारियों का बोझ ढोते-ढोते निराश एवं हताश हो गई है। विवाह समय पर ना होने की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए कहा है- "नई पीढ़ियाँ बहक कर रह गई थी[9],पर कर्नल की दृष्टि में दोषी नई पीढ़ी नहीं, पुरानी पीढ़ी थी। जैसे मनुष्य के पेट की क्षुधा समय पर भोजन न जुटने से निकृष्ट कार्य करने की वांछित कर देती हैं,ऐसे ही शरीर की क्षुधा को भी मनुष्य भला भुला नहीं सकता। सब समय पर ही कन्यादान की सप्तपदी से मुक्ति क्यों पा लेते?।"[5] लेखिका आज की पीढ़ी पर कटाक्ष करते हुए अपनी वेदना व्यक्त कर रही है। शादी भी समय पर हो जानी चाहिए। समस्या और स्थिति में व्यक्ति को कितना असहाय बना दिया है। स्वार्थ और ज़रूरतों के कारण व्यक्ति केवल अपना ही हित सोचता है।[11] शाल्मली जीवन में कुछ करना चाहती है। पति उसे न तो आगे बढ़ने देता है, बल्कि बात-बात पर अपमान भी करता है। शाल्मली इस पीड़ा से उभरना चाहती है। शाल्मली अपनी वेदना को व्यक्त करते हुए कहती है- "हर मनुष्य की बौद्धिक क्षमता की एक सीमा होती है और वही उसका मापदंड भी, जो ना किसी अन्य के प्रभाव को ग्रहण करती है, और न ही घटती-बढ़ती है। यह तो व्यक्ति की निपट निजी निधि है जहाँ अच्छी-बुरी संगति अवश्य ही व्यवहार प्रभावित करती है, सो नरेश से आशा करा कि उसका बौद्धिक विकास, अपनी शक्ति और परिधि को तोड़ते हुए बाहर निकल कर कुछ नया रच डालें, यह असंभव है, मगर उसके व्यवहार में बढ़ती उद्दंडता को वह अपने प्रयत्नों से अनुशासित तो कर सकती है।"[6] नायिका शाल्मली पति नरेश के व्यवहार से अत्यंत दुखी है। नरेश के साथ जीवन जीना अभिशाप हो गया है। शाल्मली नरेश के प्रति अपना रोष प्रकट कर रही है। यहाँ लेखिका नासिरा शर्मा ने वैयक्तिक मूल्यों के रूप को स्पष्ट किया है।[10]

वैवाहिक जीवन में संबंध जहाँ खुशहाली का प्रतीक माना जाता है वही आज कष्टकारी एवं दुखदायी बन रहा है। पति-पत्नी एक छत के नीचे रहते हुए एक-दूसरे की शक्ल भी नहीं देखना चाहते- कारण परिवार और समाज के बंधनों में बँधे हुए हैं। लेखिका कुसुम अंसल ने 'अपनी-अपनी यात्रा' में संबंधों में आए बिखराव की छटपटाहट को सुरेखा के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है- "एक-दूसरे को न चाहकर भी एक छत के नीचे रहते थे[13] क्योंकि बंधन है परिवार का,समाज का और विवाह का। माँ-बाप जिसने उनका जी चाहता हैं अपनी लड़की या लड़के को बाँध देते हैं कि लो यह तुम्हारा जीवन साथी है। बस पकड़े रहो,सड़ते रहो कि अगर विद्रोह करोगे तो सब कहेंगे। चरित्रहीन है,बुरी है, निभाना नहीं आता।"[7] विवाह जैसे संबंधों में दबाब नहीं होना चाहिए। समाज एवं परिवार का डर जीवन को नष्ट कर देता है। व्यक्ति की विचारधारा न मिलने के कारण मजबूरी में साथ रहना किसी सज़ा से कम नहीं है। लेखिका ने समाज की परंपराओं का विरोध कर परिवर्तन करने की माँग की है। संबंधों को ख़ुशी से जीना चाहिए दबाव से नहीं।[12]

पुरानी जड़ परंपराओं का विरोध और नए मूल्य को स्थापित कर लेखिका मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास 'मैं और मैं' में स्पष्ट किया गया है- "तमाम रिश्ते, मूल्य, धारणाएँ ना झूठी हैं। लाशें जिन्हें कठपुतली वाले ने डोर से बाँध रखा है और इधर-उधर नाच रहा है।[14] उसके इशारों पर नाचने को ज़िंदगी का नाम दे भले ही दें, है वह मौत का हिस्सा।"[8] रिश्ते बन गए हैं। संबंधों में दरार आने से उत्पन्न कड़वाहट बढ़ती जा रही है। इसी बदलाव को लेखिका सिम्मी हर्षिता ने 'संबंधों के किनारे' में दृष्टिगत किया है। वैवाहिक स्त्री कैसे दोहरा जीवन जीती है। संबंधों में आए बदलाव को दिखाया गया है। विवाह के पहले और बाद के संबंधों में परिवर्तन के कारण विरोध की स्थिति को व्यक्त किया है- "विवाह अजीब पहेली है। उसमें कदम रखते ही आमतौर पर इंसान के लिए पहले के रिश्ते-नाते पिछला स्टेशन बन जाते हैं। रेलगाड़ी में बैठा इंसान पिछले स्टेशन के प्रति अगले स्टेशन के प्रति उत्सुक

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

होता है।[15]........... नए सिरे से वह पुराने संबंधों की जांच-पड़ताल करता है,कुछ की छँटनी करता कुछ को स्वीकार करता है............ कुछ को अनावश्यक समझकर अस्वीकार करता है। कुछ से वह अपने दोषों और कमियों के कारण आँखें चुराता है। आधुनिकता से उसे कुछ पुराने संबंध और संबंधी पिछड़े हुए दक़ियानूसी लगते है, तो उनसे बचता है। लोग तो अपने माँ-बाप और भाई-बहन की छँटनी कर देते है।"[9] समयानुसार रिश्तों में परिवर्तन आ गया है। संबंधों का महत्व भी स्थिति-परिस्थितिनुसार बदलने लगा है। कोई भी रिश्ता सच्चा अच्छा नहीं लगता। स्त्री अपने द्वारा स्थापित संबंधों का ही मान-सम्मान करती है। स्त्री जीवन में संबंधों के अनुसार अपना जीवन जी सकती है।[16]

संबंधों का निरंतर टूटना व्यक्ति को तोड़ देता है। आधुनिक युग में संबंधों की परिभाषा ही बदल गई है। संबंधों में प्यार, समपर्ण की जगह छल-कपट ने ली है। समाज में रिश्तों की उठा-पटक से वैवाहिक संबंधों में अविश्वास कमी होने लगी है। पति-पत्नी का एक-दूसरे पर विश्वास ही नहीं है। संबंधों में रिक्तता बढ़ने से उनका अस्तित्व ही ख़त्म हो गया है। उपन्यास 'टूटता हुआ इंद्रधनुष' में रिश्तों में खट्टास उत्पन्न हो गयी है। पत्नी के अन्य पुरुष से संबंध की जानकारी पति प्रभात को है। प्रभात का पत्नी शोभना के प्रति प्यार समाप्त हो गया है। पत्नी शोभना व्यंग्य करते हुए कहा है- "जीवन में कोई भी महत्वपूर्ण नहीं है कि उसके न होने से संपूर्ण जीवन ही नष्ट हो जाये जो बीत गया उसका शव लेकर बैठे रहना समझदारी नहीं है।"[10] संबंधों में दरार आने से अच्छा है, उनका ख़त्म होना। रिश्तों को घसीटते रहना समझदारी नहीं है। मनुष्य का महत्त्व उसकी भावनाओं पर टिका हुआ है। भावना ख़ त्म तो रिश्तों को बहुत दूर तक ले जाया जा सकता।[17]

इक्कीसवीं शताब्दी में जहाँ नारी का स्वरूप का बदला और उसका पुनरूत्थान हुआ। संविधान में स्त्री को समानता का अधिकार और जीवन में आगे बढ़ने की नई-नई राहें दिखायीं। पुरुष-प्रधान समाज में उसने पुरुषों के विरुद्ध अपनी नई पहचान बनायी। लेखिका मंजुल भगत ने नारी के संघर्ष और द्वंद्व को उपन्यास 'अनारो' में दिखाया गया है। अपने स्वाभिमान के कारण अनेक समस्याओं से जूझती है। पति के सामने उसका रुतबा बना रहे। उसके लिए वह प्रयत्नशील रहती और कहती है- "कर्जा तो यों चुटकियों में उतर जायेगा, पर मान, उसकी कदर बनी रहे, उसके मरद की नजर में।"[11] अनारो अपनी बेटी की शादी में कर्ज़ा लेने के बाद भी उसे चुकाने की हिम्मत रखती। परिवार एवं समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए दिन-रात मेहनत कर संघर्ष करती है। बेटी के लिए परिवार और समाज से भी लड़ जाती है, तो दूसरी तरफ़ रिश्तों में स्वार्थ आ जाने से उनके अर्थ ही बदल गए है। उपन्यास 'बियावान में उगते त्रिशंकु' में माँ-बेटी के रिश्ते में परिवर्तन को दिखाया गया है।[18] लेखिका ने पात्र टीना के मन में हो रही छटपटाहट को दिखाया है- "ममा अपने पालन-पोषण का बदला चाहती है क्या मुझसे? मुझे कौन-सा रहना है इस घर में। जब तक हूँ, तब तक हूँ। मैं तो अपने सुख को सबसे अधिक महत्व देती हूँ। मुझे त्याग-बलिदान का बिल्ला नहीं चाहिए। नफ़रत है मुझे इन शब्दों से। त्याग-बलिदान के नाम पर अपनी अम्मा को दुखी बनाना सबसे बड़ा पाप है, जो मैं नहीं करूँगी। किसी के लिए भी यह पाप नहीं करूँगी।"[12] माँ को अपने बच्चे के लिए किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो अपने रास्ते खुद ही चुन लेते हैं।[19] माता-पिता की कोई फ़िक्र ही नहीं होती। वातावरण में कितना परिवर्तन आ गया है। नवीन मूल्य, परंपराओं और मान्यताओं को अपनाते हुए सुनैना समययानुसार परिवर्तन भी करती है और पूर्ण रुप से अधिकार भी चाहती है- "मुझे माई नहीं बनना, कैदी नहीं बनना। माँ ने आकाश में एक पंछी दिखाया था, जो एक ही जगह तीव्रगति से उड़ने की प्रक्रिया में लीन था। वह पंछी देखो। पंछी असीम अंबर में एक जगह पंख फड़फड़ा रहा था। लग रहा था कि सारा आकाश उसी का है। पर तो क्या? खाली अर्थहीन आकाश किस काम का? अंत आकाश में बेमतलब घुमड़ती ताकत है बेकार होगी पर दूर-दूर तक फैली कमज़ोरी में ताकत का असर हो सकता है,मुझे क्या पता था।"[13] लेखिका गीताजंलि श्री ने उपन्यास 'माई' में नारी के अधिकारों की बात की गई है।[20] समाज में स्वतंत्र होकर जीना चाहती है।जीवन में किसी का भी बंधन उसे स्वीकार नहीं है। उपन्यास 'आँखमिचौली' में नायिका रेणु अपनी शर्तों एवं दृढ़ निश्चय के साथ जीवन में आगे पढ़ना चाहती है। जीवन यूँ तो संघर्ष से भरा हुआ है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह हमेशा प्रयासरत होना चाहती है। रेणु जीवन में कुछ करना एवं पाना चाहती है- "जिंदगी से जो माँगा वह उसे कभी मिला। जो मिला उसके लिए कोई निश्चित एक बड़े प्रश्नचिहन की तरह आती-जाती रही और रेनू एक यंत्रचालित मशीन बन गई।[21] पुर्जा-पुर्जा किन्हीं अदृश्य हाथों में संचालित होता है।"[14] सामाजिक एवं पारिवारिक दबाब ने रेणु को अपने लक्ष्य से भटकाव की स्थिति में ला खड़ा कर दिया। रेणु जीवन में समस्याओं से निरंतर टकराते हुए अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए कारण एवं उपाय ढूँढ़ती- "वह अपनी जिंदगी को बदल देना चाहती थी, लेकिन किस दिशा में,किस सीमा तक...........यह समझ में कब आया, इतनी क्षमता भी उसमें कहाँ भी। बड़े-बड़े सिद्ध पुरुष त्रिकालदर्शी यही तो मात खा जाते हैं। उसे अब भी किसी ऐसे पुरुष की तलाश थी, जो पूरी दृढ़ता से यह कह सके कि जिंदगी की बागडोर पूरी तरह उसके हाथ में है, वह जब किधर चाहे उसे मोड़ दे सकता है।"[15] लेखिका ने रेणु की नवीन सोच एवं जीवन में आगे बढ़ने की लालसा को दिखाया है। एला परंपरागत रूढ़ियों और मूल्यों का विरोध कर अपने अस्तित्व को नई दिशा देते हुए कहती है- "मुझ पर उनका रत्ती भर भी प्रेम चाह नहीं है केवल

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

शारीरिक आवश्यकता मिटाने के लिए वह शादी का स्वांग रच कर एक स्त्री की जिंदगी बर्बाद जिसने की वह मेरा प्रेम करे लूट सकता है।[22] मैं उनमें से नहीं जो स्त्रियाँ अपने को क्रीत दासी समझा करती हैं।"[16] एला पति के दबाव में नहीं रह सकती। उसे अपने जीवन को पति या परिवार तक ही सीमित नहीं रखना। पुरानी जड़ परंपराओं और किसी घसी-पिटी मान्यताओं में रहकर अपना जीवन व्यर्थ नहीं करना। लेखिका उषा देवी 'मित्रा' ने नारी के मन की व्यथा को अभिव्यक्त किया है।[23]

स्त्री अपनी सभी इच्छाओं का गला घोंट अपने परिवार का निर्वाह करती है। संबंधों में कोई टकराव एवं बिखराव उत्पन्न न हो। इसके लिए वह भरसक कोशिश करती है।समकालीन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में मूल्य किस तरह बदल रहे है। पहले स्त्री अपनी मर्ज़ी का कुछ नहीं कर सकती थी लेकिन अब वह समाज में परिवार में अपना सम्मान चाहती है। उपन्यास 'अकेला पलाश' में लेखिका ने स्त्री की नवीन विचारधारा को दिखाया है। पति के साथ वह अन्य पुरुष के साथ संबंध को ख़राब नहीं समझती। घर-परिवार में यदि इस बात की भनक लग जाए तो ना जाने कैसे-कैसे नामों से बुलाया जाता है। ज़िंदगी और घर दोनों ही मरण समान हो जाते हैं। नायिका अपने मन की बात अपने भाई से कहती है। भाई अपनी बहन को ज़िंदगी का फ़लसफ़ा समझाते हुए कहता है- "नहीं....... मैं तो यही कहूँगा कि दीदी ने देर से सही, पर सही कदम उठाया है। अब मेरी दीदी घुट-घुटकर नहीं मरेगी। अब उसने भी खुली हवा में साँस लेना सीख लिया है।"[17] स्त्री अब घुटकर नहीं जियेगी। अपनी इच्छा अनुसार अपना जीवन जियेगी। आधुनिक युग में नारी भी अपनी मर्यादा को छोड़कर वातावरण के अनुसार अनुसार ढल रही है। उपन्यास 'यहाँ विस्तृता बहती है' में लेखिका ने पात्र के माध्यम से आज की बदलती परिस्थितियों के बारे में कहा है- "अजी आप लोग खैर-खबर रखते भी हैं, कुछ एन्थोनी भाई? लड़कियों को शह दी है आपने, नहीं तो मजाल था कि वह मुँह उठाकर लड़कों को देख भी लेती? इधर तो पूरी मर्दमार बनती जा रही हैं लड़कियाँ।"[18] आज की नारी अपने पहनावे एवं बोलने में पूरी स्वतंत्रता चाहती है। रोक-टोक रोष उत्पन्न करता है। नारी अब किसी भी स्तर पर अपने आप को कमज़ोर नहीं समझती।[24]

आज मूल्यों में इतना परिवर्तन आ गया है। पुरुष के साथ-साथ स्त्री भी किसी संकट के सामने घुटने नहीं टेकती चाहे वह सही हो या ग़लत। लेखिका मनु भंडारी ने उपन्यास 'आपका बंटी' में स्त्री कि दृढ़ निश्चय को दिखाया है। वह अपने व्यक्तित्व के लिए किसी भी परंपरा, मान्यता और रूढ़ि का विरोध कर सकती है। हर समस्या के लिए उपस्थित है- "भीतर-ही-भीतर चलने वाली एक अजीब ही लड़ाई थी वह भी, जिनमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतीक्षा की थी कि कब सामने वाले की साँस उखड़ जाती है और वह घुटने टेक देता है, जिससे कि फिर बड़ी उदारता और क्षमता के साथ उसके सारे गुनाह माफ़ करके उसे स्वीकार कर लें, उसके सारे व्यक्तित्व को निरे शून्य में बदल कर।"[19] नारी के शिक्षित होने से वह किसी भी वह कठिन से कठिन समस्या का सामना कर लेती है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि समकालीन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में परंपरागत मूल्यों को अस्वीकार कर वर्तमान मूल्यों में हो रहे परिवर्तन को स्वीकार किया गया है। इन लेखिकाओं ने उपन्यासों में मूल्यों को स्थापित करने के लिए नवीन चिंतन और सामाजिक जीवन को आधार बनाया है। उपन्यासों में विघटित मूल्य, नारी शोषण और 'स्व' को स्थापित करने की कामना की स्थिति का अंकन किया है। पुरानी एवं नई पीढ़ी के विचारों के विरोधी स्थिति, मानसिक एवं शारीरिक विसंगतियों का चित्रण किया गया है। सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों पर कटाक्ष किया है साथ ही साथ एवं पारिवारिक मूल्यों के महत्व देते हुए मानव मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्षरत है।[25]

## विचार-विमर्श

जब हम उत्तर आधुनिकता की चर्चा करते हैं तो हमारे समक्ष प्रश्न उठता हैं कि उत्तर आधुनिकता क्या है? उसे कैसे समझा जा सकता है? क्या वह एक सामाजिक स्थिति है या फिर एक विचारधारा? वर्ष1950 से लेकर अब तक दर्शन, राजनीती, भूगोल, प्रबंधन, विधि-अध्यापन आदि में उत्तर आधुनिक व्यवहार की चर्चाएं होती रही। उत्तर आधुनिकता का आरंभ पश्चिम में वास्तुकला के क्षेत्र में हुआ और धीरे-धीरे पूरे विश्व, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका विस्तार हुआ। उत्तर आधुनिकता बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जन्मी एक ऐसी व्यापक अवधारणा है जिसकीकोई निश्चित परिभाषा संभव नहींविभिन्न लक्षणों के आधार पर ही इसे समझा जा सकता है- आधुनिकता का विस्तार उत्तर आधुनिकता एक भूमंडलीय ज्ञानावस्था व हमारी संस्कृति के बदल जाने का नाम है तथा उपयोग की संस्कृति को विकसित कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के तैयार माल को बेचना इसका प्रमुख सिद्धान्त है। उत्तर आधुनिकता विभिन्न अर्थ संदर्भो में प्रयुक्त होने वाला शब्द है जिसमें वर्तमान का परिदृश्य व मनोदशा शामिल है।[15] पश्चिमी औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति के पश्चात् जन्मी उत्तर आधुनिकता एक ऐसी विश्वव्यापी प्रक्रिया है जिसने सभी चिन्तन परंपराओं, प्रतिमानों, अवधारणाओं, मूल्यों प्रविधियोंपर प्रश्नचिन्ह लगा उन पर नए सिरे से विचार करना प्रारंभ किया।उत्तर आधुनिकता की प्रवृति सरल नही उसे समीकरण या सूत्र के रूप में बांधना बहुत कठिन है क्योंकि इसके अपने पक्ष-विपक्ष, नियम, कानून है। जहाँ एक ओर इसने धुव्रीय दुनिया में शक्ति के रूप में विस्तार पाया वहीं दूसरी ओर वंचितो की लोकतान्त्रिक उपलब्धि तथा सत्ता संघर्ष के

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

रूप में भी दिखाई दी। इसका वैध-अवैध, नैतिकता से कोई संबंध नही, न इसकी कोई सीमा। यह अपने साथ कई अंतर्विरोधों, परिस्थितियों, असंतुलन, संकटों को साथ लेकर चला तथा इसने शोषण और केंद्रीयता आधारित व्यवस्था का विरोध किया। उत्तर आधुनिकता ने महाख्यानों को त्याग कर अनेकरूपता को प्रमुखता दीजिस प्रकार उत्तर संरचनावाद, उत्तर फ्रायडवाद और उत्तर माक्र्सवाद का विकास और विस्तार हुआ उसी प्रकार उत्तर आधुनिकता भी विकसित हुई।[16] उत्तर आधुनिकता बहुलतावाद, बहुसंस्कृति, विकेंद्रीयता, युगल विपरीतता, स्थानियता को स्वीकारती तथा पूर्णता, नैतिकता, सम्रगता, पवित्रता, शुद्धता को नकारती एक अस्थिर विखण्डनशील अवधारणा है।उत्तर आधुनिकता ने अर्द्धवृतांतों, मूल्यमीमांसा, केंद्रीकरण तथा सम्पूर्णता को खारिज कर विशेषणहीन वृतान्त का पक्ष लिया और सभी को समान माना।लोकप्रिय संस्कृति की ओर उन्मुखता, कंप्यूटर युग का स्वागत, उपभोक्तावाद, अर्थ की अनेकता, अनिश्चितता, विकेंद्रीयता, स्थानियता- क्षेत्रियता पर बल, दलित-दमित वर्गो का अध्ययन, तकनीकी क्रान्ति, बुद्धिवाद, पराभौतिकतावाद,सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश, सजृनात्मक स्वतन्त्रता का आग्रह, यौन क्रान्ति तथा स्त्री मुक्तिआदि इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। [17]यह केंद्रीयता को खण्डित कर बहुकेन्द्रिता की उठान भरी अवस्था है जो सांस्कृतिक बहुलता, बहुवचनवाद तथा सभी प्रकार के वैविध्य का समर्थन करती है। सभी क्षेत्रों में पुरातन विचारधाराओं को समाप्त कर यह पीड़ित ;दलित, स्त्री, आदिवासीद्ध आदि वर्गो पर नए सिरे से विचार करता है। नव तकनीकी क्रान्तिसे निर्मित नव संसार ने शक्ति के पुराने केन्द्र को ध्वस्त किया। प्रत्येक अवधारणा अनिश्चित हो गई। सभी क्षेत्रों-राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, कला, साहित्य, समाज, संस्कृति, धर्म, दर्शन, मीडिया, फैशन, विज्ञान,वैयक्तिक जीवन आदि उत्तर आधुनिकता के क्षेत्र बन गए।भूमंडलीकरण से जुड़े मुक्ति आंदालनों, सूचना-संचार क्रान्ति, तकनीक, मास-मीडिया, कंप्यूटर, विखंडनवाद ने जो नया वातावरण निर्मित हुआ उसे उत्तर आधुनिकतावाद कहा गया। यह स्थानियता पर बल दें, केंद्र से परिधि की ओर चला।यह विभिन्न सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों, बौद्धिक अभिवृतियों, विचारधाराओं का समुच्चय है।[18] बहुराष्ट्ीय पूजींवादीतथा सूचना-संचार के वर्तमान युग का नाम उत्तर आधुनिकतावाद है जिसने लोक संस्कृति और लोक-कलाओं के स्वरूप को बुनियादी तौर पर परिवर्तित कर संस्कृति का औद्योगीकरण किया।आर्थिक समृद्धि, भौतिक विकास, मशीनीकरण ने उत्तर आधुनिकता का मार्ग खोला।उत्तर आधुनिकता के नाम पर वैयक्तिवाद, भूमंडलीकरण, नव साम्राज्यावाद, अकेलापन, अवसाद, नव संस्कृति, अमेरिकावादी का वर्चस्व, स्त्रीवादी सिद्धांत, मुक्त यौनवाद, गे-कल्चर सभी को स्वीकृति मिली। वर्तमान समाज, कला, साहित्य, दर्शन, राजनीति, यौन-चिंतन, फैशन, मूल्य आदि में जो तीव्र परिवर्तन हुए उनके मूल में यहीं उत्तरदायी रहीं। विचारधारा और आंदोलन की सीमाओं से बाहर निकलउत्तर आधुनिकता एक व्यापक प्रवृति के रूप में उभरकर सामने आया। उत्तर आधुनिकतावाद परिवर्तित होते हुए लक्ष्णों को कहा गया है,[19] “यह एक ऐसा वाद है जो एक स्थिति या दशा की तरह है जो लगातार अस्थिर है, चंचल है, विखंडनशील है।“ ज्ञान, अनुसंधान और विकास आदि सभी इसी के द्वारा परिचालित है। बहुराष्ट्ीय निगमों के उत्पाद के लिए उपभोक्ता बनाने में सूचना क्रान्ति का उपयोग हुआ। उत्तर आधुनिकता ने सभी कुछ को बाजार में बदलकर मानव संस्कृति पर कब्जा कर परिवर्तन की क्रान्ति उत्पन्न की जिससेपूजीं बढ़ी, भूमंडलीकरण जागा। मीडिया बाजार का आधार बना, चारों ओर उपभोग के नारे लगने लगें, भिन्न प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का जन्म हुआ, सांप्रदायिक-धार्मिक ध्वनि रूपायित हुई, स्त्रीवाद की वकालत पर यौन-संबंधों के अस्वाभाविक रूप प्रकट हुए। वास्तव में उत्तर आधुनिकता एक भूमंडलीय प्रक्रिया है जिसमें हम सभी शामिल है। उत्तर आधुनिकता में बाजार आया, युवाओं में इच्छाओं-कामनाओं का साम्राज्य खुला, सुख संचय का भाव आया, पूजीं बढ़ी, स्थानियता और भूमंडलीकरण का भाव एक साथ जागा जिसने इतिहास और विचारधारा का अंत घोषित कर उपभोक्तावाद, बौद्धिकतावाद, अमेरिकावाद, यौनवाद-देहवाद को युवाओं के समक्ष परोसा। पूरे विश्व को वैश्विक गांव में बदल, परंपरा, संस्था, विवाह, परिवार शिक्षा आदि का अतिक्रमण, परंपराओं को क्षत-विक्षत कर सभी प्रकार की सीमाओं को तोड़ा।[20]उत्तर आधनिकता समय कीविश्व दृष्टि, चुनौतियां-प्रश्नाकुलताओं ने युवा चेतना को व्याकुल किया।युवा चेतना भूमंडलीय, बाजारवाद, पूजींवाद, उपभोक्तावाद, नव आर्थिक साम्राज्यवाद से घिरी दिखाई दी। धन और बुद्धि ने मिलकर युवाओं को विराट परिवर्तन चक्र के समुख खड़ा कर दिया। युवाओं ने पुरातन अवधारणाओं, विचारधाराओं, संस्थानों पर प्रश्नचिंह लगा उन्हें अप्रसांगिक करार दिया। व्यवस्था को बदलने के लिए पुरानी परिपाटियों को उखाड़ फेंका।युवा चेतना ने साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, मीडिया, विज्ञापन, दर्शन, सौन्दर्यशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि जीवन के विभिन्न अंगों पर फिर से विचार करना प्रारंभ किया।उत्तर आधुनिकता द्वारा समाज में उपभोक्तावादी जीवन शैली ने युवाओं पर अपना प्रभुत्व बनाया औरविज्ञापन प्रक्रिया ने इसे प्रश्रय प्रदान किया। युवाओं के व्यवहार के साथ मानसिकता भी परिवर्तित हुई। यौनवाद-पैसावाद-भोगवाद युवाओं के कल्चर बन गए। मानव संबंध टूटने लगे।[21] जरूरतें, अपेक्षाएं, नए बाजार की खोज और उपभोग केंद्रीय तत्व बन गए। उपभोगतावादी जीवनशैली को समर्थित करने के लिए जिस अर्थ कोष की आवश्यकता होती है युवा उसके लिए प्रयत्नशील हुए। तकनीकी विकास, बाजारू प्रभुत्व और पूजीं की वैश्विक अभिवृद्धि आदि आज की व्यवस्था के ऐसे पहलू है जिसमें युवा सब कुछ पा लेना चाहते हैं, केवल मुनाफा चाहते हैं, कुछ भी

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

खोना नहीं चाहते। उत्तर आधुनिकता ने युवाओं में कृत्रिम मांग को जन्म दिया। लोभ और अंधा उपभोग युवाओं में पनपने लगा। प्रत्येक युवा असन्तुष्ट उपभोक्ता बनकर नई वस्तुओं को खोजने लगा। सेवा क्षेत्र के स्थान पर 'मुक्त उपभोग' और वस्तु उत्पादन का महत्व बढ़ा। उत्तर आधुनिकता ने युवाओं की इच्छाओं और विलासिताओं को आवश्यकता में बदला। युवा अंतर्राष्ट्रीयता और विश्वनागरिकता की बात करने लगें।युवाओं में विभिन्नताएं और विश्वस्तरीय स्थानियता एक साथ उभरकर सामने आई जिसमें व्यापक एकता है। युवाओं का संसार लगातार फैला और वह एक स्वतन्त्र इकाई बन गया।बौद्धिक परिवेश उभरा जिससे भौतिक द्वंद्व के साथ मानस द्वंद्व भी उठ खडा हुआ और मोहभंग के लिए कोई स्थान नहीं रह गया। युवाओं की वैचारिक स्वतन्त्रता ने उनके लिए विकास-द्वार को खोला। उत्तर आधुनिकता युग में विचारधारा की समाप्ति के पश्चात् अमेरीकी संस्कृति पूरे ग्लोब के युवाओं पर छा गई। दूरसंचार की सहायता से बड़ी तेजी से प्रत्येक स्थान पर पंहुची। मैक्लूड संस्कृति सभी स्थानों पर जस की तस अपनायी गई। कंप्यूटर ही युवाओं के लिए रेडियों, लाइब्रेरी, फैक्स, फोन और टी.वी. बन गया।[22]उत्तर आधुनिकता युवाओं के लिए एक प्रकार की मानसिक उत्तेजना तथा वैचारिक स्वतन्त्रता बना।युवाओं ने अत्यधिक उर्जा में विश्वास रखते हुए यौन स्वच्छन्दता को स्वीकार किया और इस स्वतन्त्रता ने ग्लोबल रूप धारण किया।उत्तर आधुनिकता को प्रौद्योगिक विकास, विज्ञान, सूचना-संचार और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपलब्धियों में देखा जा सकता है जिसने युवाओं के जीवन और दिनचर्या को पूरी तरह प्रभावित किया।अर्थ के विलय-विस्तार से युवाओं में धनाढ़य बनने की अभिलाषा जगी।युवाओं का जीवन, चिंतन अंतर्विषयीय हो गया। युवाओं का एक अन्य लक्षण था-संस्कृति से पलायन। ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य की सीमाएं मिट गई। जीवन का हर क्षेत्र फैशन, विज्ञापन, सूचना, कथा-साहित्य, इलेक्टानिक कम्यूनिकेशन, समाज की हर वस्तु तथा विचार की गति एक-दूसरे से घुल-मिल गए।आज कोई विचार, कोई दर्शन, कोई इच्छा उनके लिए शाश्वत, पूर्णत और अंतिम नहीं। सभी कुछ अस्थिर और अस्थाई हो गया।[23]

त में आ गया।उपन्यास के माध्यम से युवा चेतना ने उत्तर आधुनिकता से उपजी समस्याओं मूल्यहीनता, अकेलेपन, विश्व में बढती हिंसा को विश्लेषित किया।संजीव का जैविकी आधारित'रह गई दिशाए इसी पार' उपन्यास उत्तर आधुनिकता की विभिन्न प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। यह उपन्यास प्राणी-शरीर की वैज्ञानिकता, जैविकी के लोमहर्षक, सृष्टि और जीवन की बाबत स्फुट विचारों, अछोर प्रकृति और विज्ञान के उन्मुक्त ब्योरों की कहानी है जो सृष्टि और संहार, जीवन और मृत्यु के बफर-जोन पर खड़े व्यक्ति की स्थिति से साक्षात्कार कराता है। परंपरागत ढांचे में गैर परंपरागत हस्तक्षेप और तज्जनित रचाव और रसाव इसकी पहचान है। जीवन-मृत्यु के आर-पार झांकता यह उपन्यास मिथ, इतिहास, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नए-नए विषय और चिंतन की प्रयोग भूमि है। जहां अनंत काल में दिशाएं भी छोटी पड़ जाती है। संजीव जीव वैज्ञानिकों द्वारा क्लोनिंग और जेनेटिक्स के क्षेत्र की अभूतपूर्व उपलब्धियों तथा इससे मानवीय संबंधों में उठने वाली जटिलताओं को उजागर करते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा जीवन-मृत्यु, काम-प्रजनन और पदार्थ-अध्यात्म के पीछें की वास्तविकताओं को दृशाते हैं। सरोगेट मातृत्व से लेकर जींस और हारमोंस के जरिए व्यक्तित्व परिवर्तन, टैलीपैथी से लेकर लिंग परिवर्तन का कोई मुद्दा इसमें छूट नही पाता है।"अब इस इन्सानी खोल से किस महामानवी खोल में, किस महाकाश में छलांॅग लगाने और किस चांॅद-सितारे को छू लेने का इरादा है मेरे दोस्त" संजीव जिस युवा पात्र जिम को अपना प्रवक्ता बनाते हैं वह कोई सामान्य व्यक्ति नही बल्कि एक टेस्ट ट्यिूब बेबी है जो उन्मादपूर्ण एकाग्रता के साथ वैज्ञानिक प्रयोगों में लगा रहता है और कृत्रिम गर्भाधारण से जुड़ी तमाम खोजों का सम्पन्न कर प्रकृति से भिन्न वैज्ञानिक प्रयोशाला में प्रजनन पर निरकुंश सत्ता स्थापित कर लेना चाहता है।उसमें प्रकृति से प्रतिरोध तथा सत्य को अनावृत करने की लालसा है। उसकी प्रयोगशाला और तमाम वैज्ञानिक खोजें जीवन, प्रकृति और विज्ञान के अंतःसंबंधों को जानने की कोशिशें बन जाती है। कभी-कभी जिम अपनी धुरीविहिन, जड़विहिन होने पर थराता है। वह विज्ञान की उपज है प्रकृति की नहीं और वह जानना चाहता है कि विज्ञान 'सिंथेटिक इन्सान' की इस नस्ल के पोषण में कहा तक सहायक होगा।[24] विचित्रता उसका परिचय तथा अनास्था, निस्संग, अजनबीपन जिम की परिचालक शक्तियां है। वह मानवीय गुणों का जानते हुए भी उनसे परे है। उसका लक्ष्य एक समानांतर प्रतिसंसार की रचना करना है। संजीव चाहते है कि युवाओं की क्रान्तिकारिता स्वेच्छाचारिता लेकर उभरे। वह रिश्तें-संवेदनाओं को परंपरागत ढ़ाचे से बाहर निकाल उन्हें सहानुभूति से देखने तथा मनःस्थिति अनुकूल करने पर बल देते हैं, "ये ब्रह्मा-सरस्वती, यम-यमी, ईडीपस-उसकी मदर-एक तरह से देखिए तो एन्क्रोचमेंट्स हैं, दूसरी तरह से देखिए तो साधारण मामला। बस, ऊपरी अर्थ-क्रस्ट की तरह थोड़ी सी संवेदनाओं की परत बिछा दी गई हैं, भावनाएं हैं, बाकी नीचे तो वही आदमी अनुर्वर पत्थर है और उसके नीचे पिघला हुआ लोहा।" पीटर एक सिंथेटिक मून है। एक ऐसा युवा जो अपनी माॅ की मृत्यु के पश्चात् संबंधों को ही नहीं खोता बल्कि जीवन के प्रति आस्था और अनुराग को भी खों देता हैं। निरंतर भटकते हुए उसका अंतर्मन उसे कचोटता है कि, "उसने मुझे क्यों जन्म दिया।" पीटर के माध्यम से संजीव प्रश्न उठाते हैं कि क्या प्रजनन मात्र एक बायॅलाजिकल घटना है? या फिर वह एक सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक दायित्व और मानवीय संबंधों का स्त्रोत नहीं।? जिम द्वारा लारा के पिता का क्लोन बनाने के लिए लारा के गर्भ का प्रयोग और शहनाज का

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

लिंग परिवर्तन युवाओं के उत्तर आधुनिक बनते जाने की पहचान है। युवाओं में नैतिकतावादियों की आर्त-पुकार पर तीखें व्यंग्य दिखाई देते हैं।[25] पिता का क्लोन बनाने के लिए पिता के स्टेम सेल को अपने गर्भाशय में प्रत्यारोपित कर उत्साह से भरी लारा के पास अपने कृत्य के औचित्य के भावनात्मक तर्क हैं, "आप दुर्लभ नस्ल की प्रजातियों को बचाने के लिए खासा परेशान रहते हैं। अगर में अपने ईमानदार पिता की नस्ल को बचाना चाहती हूं तो कौन-सा गुनाह कर रही हूँ। मुझे न धर्म की परवाह है, न नैतिकता की।" प्रयोगशाला और बूचड़खाने के दुर्दांत दृश्यों के समांतर जुड़ी है मछुआरिन बेला जो अपने जीवन के रोमांस, यथार्थ और संघर्ष के साथ मछली व्यापार में कोल्ड स्टोरेज में काम की अमानवीय स्थितियों और मछुआरों की रोजी छीनते बड़े पूंजी के ट्र्ालरों की वास्तविकता को उजागर करती है।अजय समृद्धि और ग्लैमर की तेज रोशनियों के बीच फल-फूल रहे यौन-उद्योग, धन-कुबेर बनने की चाह में अनेकोनेक प्रजातियों के नष्ट होते जाने और इसके कारण उत्पन्न पारिस्थितिकीय संकट से रुबरु होता है।शहनाज की दुर्गति, लारा की हत्या, पीटर की विक्षिप्तावस्था, डाॅली की अकाल मृत्यु से जिम जान पाता है कि प्रकृति और विज्ञान के संघर्ष में विज्ञान की हार हुई है।उत्तर आधुनिक युग की परिवर्तित परिस्थितियों में संजीव प्रश्न उठाते हैं कि क्या अपनी ही विकृतियों और दुर्बलताओं से निरंतर क्षरित होता मनुष्य क्या नष्ट होने के लिए अभिशप्त है? क्या मृत्यु ही उसकी जीवन यात्रा का अंतिम पड़ाव है? संजीव नवउदारवादी अर्थव्यवस्था के धन-कुबेरों के बीच क्लोनिंग की प्रासांगिकता का परिक्षण करते हैं जिसे उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभावों और दबावों ने नए मूल्य के रूप में विकसित किया है। द्वंद्व, आत्मसाक्षात्कार और आत्मपरिष्कार में ही युवा उलझतें चले जाते हैं। संजीव यह सिद्ध करते हैं कि विज्ञान और दाशनिकता के संगुफन से ही मुकम्मल मनुष्य गढ़ा जा सकता है। यह उपन्यास औद्योगिक संदर्भ में मनुष्य बनाम यंत्र को सुचिंतित परिणति देता है। [22]मनुष्य को यंत्र बना दिए जाने तथा उपभोक्तावादी मानसिकता से उत्पन्न खतरों को संकेतित करता है जो आतंकवाद और सामंतवादी व्यवस्था के दुष्प्रभावों से कहीं ज्यादा भयंकर है। बाजार ने युवाओं की चेतना पर कब्जा कर उसे निजता, अस्मिता और जीवंतता से शून्य बना दिया है। संजीव इस स्थिति को अजय के दुःस्वंप्र मे गूथते हैं, "पूरा देश बैठा है ब6उत्तर आधुनिकता ने साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। सौन्दर्यशास्त्र, फ्रायडवाद, नई समीक्षा, संरचनावाद, प्रतीकवाद, माक्र्सवाद व्यक्तिवाद और अस्तित्ववादी आदि विचारधाराओं को नकार दिया।उत्तर आधुनिकता ने साहित्य के संदर्भ में इन सभी अनुपस्थितियों की पुनःव्याख्या के साथ इनकी अभिव्यक्ति को लोकतान्त्रिक शिष्टता के साथ स्वीकार किया। भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण की आंधी के साथ ही युवा नव उनिवेशवाद, संचार क्रान्ति और कंप्यूटरीकरण की गिरेचने। क्या बेच रहे हैं लोग?... लोग हथेलियों पर रख कर अपना माल दिखा रहे हैं- ये देखो, ये डिंब, ये वीर्य, ये कोख, ये....सब बेच रहे हैं खुद को, झेपने की जरूरत नहीं। शील, अश्लील, मूल्य, संस्कार की सारी रेखाएं मिट गई हैं।[19]....यहां न पूरब है, न पश्चिम, न उत्तर, न दक्षिण, न ऊपर न नीचे, न कोई रिश्ता है, न कोई संस्कार... स्वयं में समाहित है यह ब्रांड, मैं भी।... किसी का कोई केंद्र नहीं, मेरा भी नहीं। मैं स्वयं अपने आप का केंद्र हूं।" विज्ञान की भित्ति पर टिकी मार्केटिंग के जीवन मूल्यो से आगे बढ़ जाने के यहीं परिणाम है। संजीव अब तक हुए विकास को रेखांकित करनई संभावनाओं को गढ़ने के प्रयास करते हुए वर्तमान युवा की नियति पर प्रश्न उठाते हैं। वैज्ञानिक खोज का यह उपन्यास है, उपन्यास लेखन में एक नया मोड़ है।[15]

## परिणाम

इन श्रेणियों की एक महत्वपूर्ण परिभाषा कलात्मक सामान्यीकरण की प्रकृति पर स्थापित निर्णय है: फंड से समान वास्तविकताओं को सबसे अधिक विशेषता उधार ली जाती है। टाइपिंग का तथ्य कार्य सौंदर्य पूर्णता देता है, क्योंकि एक घटना विश्वसनीय रूप से जीवन की कई बार पेंटिंग प्रदर्शित करने में सक्षम है।

व्यक्तिगत और विशिष्ट के बीच विशिष्ट क्लिप प्रत्येक कलात्मक विधि की प्रकृति को अलग करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण विमानों में से एक जहां अंतर लगातार तैनात किए जाते हैं रोमांटिकवाद और यथार्थवाद से जुड़े होते हैं। कलात्मक सामान्यीकरण के सिद्धांत चाबियाँ बन जाते हैं जिनके साथ आप कला की दुनिया में प्रवेश कर सकते हैं। जब विशिष्ट और व्यक्ति की प्रकृति को याद किया जाना चाहिए कि वैचारिक परिभाषा से लेखक द्वारा तैनात विचारों की प्रकृति से कलात्मक सामान्यीकरण का मार्ग और साधन, इस विशेष तस्वीर में है।[22]

उदाहरण के लिए, "युद्ध और दुनिया" से युद्ध एपिसोड लें। प्रत्येक युद्ध में इसका अपना आंतरिक तर्क होता है, उन घटनाओं और प्रक्रियाओं का एक विशेष चयन, जिनमें से कुछ रचित होते हैं और जो युद्ध के विकास के दौरान निर्धारित होते हैं। और लेखक की पसंद सबसे पतले विवरणों के प्रिज्म के माध्यम से सेनाओं की लड़ाई की महाकाव्य छवि पर पड़ती है। बोरोडिनो और शेनग्राबेन्स्की लड़ाइयों को सहसंबद्ध किया जा सकता है, और उनके बीच एक तेजी से विशिष्ट सिद्धांत है। कलाकार का ध्यान आकर्षित किया गया है और उन्होंने रिकॉर्ड किया कि मतभेद मनाए जाते हैं। उपन्यास के पृष्ठों पर उपलब्ध है घरेलू बटालाइजेशन यहां इसे शेंग्राब में सामान्य द्रव्यमान की स्थापना द्वारा चित्रित किया गया है। सैनिक लालची आंखों के साथ रसोई

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

को देखते हैं। वे पेट में रुचि रखते हैं। जब बोरोडिनो को चित्रित किया गया है, वहां कोई लड़ाई नहीं है, वहां कोई सेना नहीं है, वहां लोग वहां हैं: "सभी लोग बाहर निकलना चाहते हैं।" सभी सैनिकों ने वोदका की लड़ाई से पहले रखी जाने से इंकार कर दिया, यह घटना का सामान्यीकरण है। तो विस्तार और सामान्यीकरण टाइपिंग और व्यक्तिगतकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामान्यीकरण का मीडिया पात्र, छवियों और उनके विवरण है। न केवल पेंटिंग, एपिसोड, बल्कि सबसे छोटे अंकुरण की एक कुलता का विश्लेषण करना आवश्यक है। जब एक नायक की बात आती है, तो आपको दोस्त के बारे में सोचना चाहिए और पहले के भाग्य में वह किस भूमिका निभाता है। विशिष्ट और व्यक्ति सुंदरता के नियमों के अनुसार दुनिया को फिर से बनाते हैं।[24]

छवि एक तस्वीर, एक छवि, सामान्यीकरण की एकता समाप्त करता है ( विशिष्टता) और ठोसकरण ( व्यक्तिगतकरण)। इसलिए, कुछ चरित्र की छवि आवश्यक रूप से अपनी सभी अंतर्निहित सुविधाओं में व्यक्ति की कुछ संग्रह और विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करती है। जब गोबसेक की छवियां, ग्रांडे डॉक, प्लूशकिना, बबल, बबल, कोरी इस्कंबा पर विचार किया जाता है, तो वे सभी एक सामान्यीकरण के तहत आते हैं - दुखद प्रकार गर्भपात, जिसके लिए भी उनके "बात करने वाले" नाम (गोबसेक - लॉगगॉग; बुलबुला - Immirement Scaremen; बुलबुला - उत्सुकता से और जल्दी करो; Ishkamba - पेट)। इनमें से प्रत्येक छवियां अपनी अनूठी विशिष्ट विशेषताओं को व्यक्त करती हैं: उपस्थिति, व्यक्तिगत आदतों, गोदाम चरित्र की विशेषताएं। चूंकि निस्संदेह समान लोग नहीं हैं, इसलिए पूर्ण, छवियों को पूरी तरह से समान नहीं हैं। उदाहरण के लिए, कई फ्रेंच उपन्यासों मेंXix। तथाकथित "नेपोलियन वेयरहाउस" की छवियां हैं, वे बहुत समान हैं, वे समान सामान्यीकरण में प्रवेश करते हैं। शोधकर्ता के सामने पीरटाइम के नेपोलियन के प्रकार दिखाई देते हैं, जब एक मिलियनथोर, रोथस्चिल्ड अपनी शिफ्ट में जाता है। और सभी समान हैं, और ये पात्र अलग हैं, वे उनकी असामान्यता से प्रतिष्ठित हैं। कलात्मक रचनात्मकता का व्यक्तिगतकरण जीवन के लिए बहुत वास्तविकता के करीब है। विज्ञान में, वास्तविक वैधता केवल शुद्ध सामान्यीकरण, अमूर्तता, विकृतियों में दिखाई देती है।[20]

तो, छवि की सामान्य परिभाषा निम्न में कम हो गई है: सामान्यीकरण या टाइपिंग के गुणों के साथ एक छवि, और दूसरी तरफ, ठोसता(concretization) एकल, व्यक्तिगत तथ्य का।कंक्रीटाइजेशन (व्यक्तिगतकरण) और सामान्यीकरण (विशिष्टता) की एकता के बिना, छवि स्वयं कला की एक घटना, कलात्मक रचनात्मकता का सार नहीं बनती है। एक तरफा टाइपिंग कहा जाता है स्कीमेटिज्म कला में, यह बिल्कुल असंभव है, उसके लिए विनाशकारी है; और केवल अस्वीकार्य, हानिकारक सीमित विनिर्देश। जब साहित्यिक आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है या बहुत कमजोर कुल निष्कर्ष, छवि के वास्तविक पक्ष के साथ असामान्य है, तो वे इसे कहते हैं फैक्टोग्राफी। एक अत्यंत घोषणात्मक चरित्र भी है। वास्तविकता से ग्रिल किए गए वास्तविक घटनाएं स्वयं को कलात्मक विफलता के लिए नेतृत्व करेंगे। क्लासिक के निर्देश को याद करें: मैं बाड़ को देखता हूं - मैं एक बाड़ लिखता हूं, मैं बाड़ पर जोकर देखता हूं - मैं क्रो के लिए बाड़ पर लिखता हूं।

ऐसे मामलों में साहित्यिक आलोचकों न केवल चित्रों के मनोरंजन के स्कीमेटिक्स के बारे में बात नहीं करते हैं, बल्कि वे तथ्यों के कमजोर पक्ष कहते हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक चरम दोष है, छवि और कलाकृति को विकृत करना। वास्तव में कलात्मक संगठन में, सामान्यीकरण और ठोसकरण की कोई भी पक्षपात नहीं होना चाहिए। टाइपिंग पलों को विशिष्ट, वास्तविक पहलुओं के साथ संतुलन में रहने के लिए बाध्य किया जाता है, केवल तभी छवि दिखाई देती है, एक पूर्ण कलात्मक छवि।[18]

यह फिर से खोलना चाहिए कि सटीक विज्ञान और पत्रकारिता में उचित और यहां तक कि आवश्यक स्कीमेटिज्म, अमूर्तता, विचार के नग्न सामान्यीकरण भी हैं, लेकिन वे कलात्मक काम में contraindicated हैं। साहित्य सहित कोई भी कला, वास्तविकता को अधिकतम अनुमान के रूप में प्रतिबिंबित करती है, साहित्य जीवन के रूपों में वास्तविकता को पुन: उत्पन्न करता है। साहित्य सिद्धांत की भाषा में, जीवन के रूप को वैयक्तिकरण और टाइपिसेशन कहा जाता है, जो सौंदर्य पूर्णता में लाया जाता है। सटीक विज्ञान (गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान ...) और पत्रकारिता में कोई जीवन नहीं है। यह केवल कलात्मक रचनात्मकता में होता है।[16]

ऐसा इसलिए हुआ कि साहित्य के विज्ञान में, टाइपिंग की अवधारणा यथार्थवादी कला के संबंध में प्रयोग की जाती है। इस सिद्धांत के आसपास चर्चा चल रही है। साथ ही "टाइपिफिकेशन" शब्द के साथ, व्यक्तिगत आलोचकों को अन्य शर्तों की पेशकश की गई, विश्वास करते हुए, अगर यथार्थवाद "विशिष्टता" की अवधारणा से जुड़ा हुआ है, तो रोमांटिकवाद में यह "आदर्श" होगा। यह स्पष्ट है कि शब्द " आदर्श बनाना"असबाबवाला, यह कुछ विरूपण संचालन, सजावट, गुरुत्वाकर्षण और वार्निशिंग से संबंधित है। हालांकि, इन श्रेणियों का अध्ययन करने के लिए मुख्य दिशा में, चरण बनाया गया है, शब्द का उच्चारण किया गया है, और इसका स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि विभिन्न कलात्मक तरीकों, दिशाओं, रुझानों में अंतर्निहित कलात्मक सामान्यीकरण की एक ही अवधारणा को दर्शाना असंभव है। यदि "विशिष्टता" के यथार्थवाद में, फिर

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

रोमांटिकवाद में कुछ और होगा, और इसे कैसे कहा जाएगा - यह अज्ञात है। किसी भी मामले में, मध्य युग, पुनर्जागरण, ज्ञान की कला में कलात्मक सामान्यीकरण उनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है। सभी को यथार्थवादी सामान्यीकरण की प्रकृति का खुलासा करने के लिए किया जाता है, जबकि अन्य क्षेत्रों में बहुत अधिक शुभकामनाएं।[15]

साहित्य में टाइप करने और व्यक्तिगतकरण के तरीके के रूप में कथा । कल्पना के बिना कलात्मक रचनात्मकता असंभव है, यह अस्तित्व में नहीं हो सकता है। विशिष्टताओं और वैज्ञानिकों को कल्पना करने की क्षमता, रचनात्मक कल्पना के बिना "सटीक" विज्ञान असंभव है।

कलात्मक उपहार देने का एक वफादार संकेत अटकलें, आविष्कार, कल्पना करने की क्षमता है। यह प्रक्रिया छवियों में सोच की प्रकृति से होती है। और सबसे महत्वपूर्ण कानून Typery बन रहा है। कला प्रतिलिपि नहीं है, लेकिन जीवन पुन: प्रयास करता है, इसे इस तरह से प्रदर्शित करता है कि यह स्पष्ट और अधिक सुंदर लगता है। रास्ते और वास्तविक पदार्थ के बीच विपरीत संबंध हैं। एक तरफ, वे एक दूसरे के अनुरूप होते हैं, दूसरे पर, एक-दूसरे से भिन्न होते हैं, क्योंकि प्रत्येक छवि प्रतिलिपि नहीं है, वास्तविकता नहीं, बल्कि मोती में बनाया गया है, जो एक तथ्य के समान तथ्य बनाते हैं।[12]

कलात्मक कल्पना का आधार नहीं है कानून अच्छा नहीं है, लेकिन अ सत्य का नियम जो खुद को पूरी तरह से महसूस करता है। तो, सिर के बजाय श्चेड्रियन ग्रेडर का आयोजन होता है, लेकिन यह अजीब सामान्यीकरण सत्य है। टाइपिंग का सार यह है कि ठेठ छवि में एक अद्वितीय और समग्र मिश्र धातु होता है जिसके माध्यम से सार स्थानांतरित किया जाता है। ये रिश्ते जो वास्तविकता को दोहराते हैं उन्हें केवल रचनात्मक कल्पना के आधार पर अनुमोदित किया जाता है।

कलात्मक कथा की सुविधा क्या है? कला वास्तविकता को दोहराती नहीं है, लेकिन इसमें सबसे महत्वपूर्ण को दर्शाता है, यह कहता है कि वहां क्या था या नहीं, लेकिन जैसा कि यह दुनिया में होता है। यह "होता है" और परिचित अजनबी बनाता है। कलात्मक फंतासी का मॉडल विरोधाभासी कनेक्शन व्यक्त करता है: एक तरफ, दूसरे के समान - विशिष्ट। लेखक कॉपी नहीं करता है और जीवन को दोहराता नहीं है, लेकिन अन्वेषण करना उसके। वह कभी-कभी जीवन की सच्चाई के नाम पर इस तथ्य की सच्चाई को तोड़ देता है, उसे एक बड़ी सच्चाई के नाम पर थोड़ी सच्चाई से तोड़ना चाहिए। कल्पना का आधार हमेशा वास्तविकता से मानव क्षमता से जुड़ा होता है - यह आवश्यक अर्थ निकालने के लिए।[11]

फिक्शन एक अजीब, गैर-कलात्मक अमूर्तता के रूप में विशेष तरीका है, जिसे "प्रकार के तरीकों" कहा जाता है। यह एक आंतरिक विशेषता है। " प्रस्थान»वास्तविकता से कला की कला में। कथा करने की क्षमता एक विशिष्ट उपहार है, वह वास्तविकता की गारंटी के लिए, प्राकृतिक झुकाव को अमूर्तता के लिए प्रकट करता है। कलात्मक कथा के लिए, यह विशेष रूप से परिवर्तन, पुनर्जन्म, किसी और के जीवन को मापने, इसे समझने, मूल्यांकन करने, मूल्यांकन करने और वास्तविकता में निहित रूपों में पुनर्निर्मित करने के लिए एक उपहार कहा जा सकता है। इसलिए लेखकों अक्सर कलात्मक रूप से - क्रिएटिव मतिभ्रम प्रकट करते हैं। कई लेखकों का कहना है कि वे अपने नायकों की आवाज़ सुनते हैं, यहां तक \u200b\u200bकि उनकी इच्छा महसूस करते हैं, जो उनकी कलम पसंद करेंगे। व्रनों को याद करें, जो प्रारंभिक डिजाइन के विपरीत, शूटिंग कर रहा है; Tatyana "बात फैल गई" - शादी की गई; बाल्ज़ाक बेहोश हो गया, और जब उसे इस कारण से पूछा गया, तो उसने जवाब दिया: बस मर गया, डैडी गोरियो; Flaubert अपने मुंह में आर्सेनिक का स्वाद महसूस किया। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लेखकों को मतिभ्रमों का परीक्षण करना चाहिए, लेकिन हमेशा लिखना चाहिए कि "मांस का एक टुकड़ा कलम की नोक पर बने रहे।" यदि ऐसा नहीं है, तो यह ठंडा और असंबद्ध होगा।[10]

इस गुणवत्ता को न केवल क्लासिक्स को अलग करना चाहिए, बल्कि कलाकार भी कम उपहार हैं। प्रत्येक लेखक के पास उसके चरित्र और इसके विशेष उपाय का एक कथा है। कुछ लेखक वास्तविक कैनवास पर काल्पनिक बनाते हैं, अन्य लोग अपनी कल्पना में जमीन से बहुत दूर हैं। और यहां बिंदु न केवल रचनात्मक व्यक्ति और कलाकार की प्रतिभा में है। यह शैली की भूमिका और स्मृति, और लेखक के रचनात्मक विकास के तरीके भी निभाता है। हालांकि, यहां तक \u200b\u200bकि उन मामलों में जहां वास्तविकता से "प्रस्थान" बहुत अधिक है, इसमें एक वास्तविक कलाकार है, यह कलात्मक कथा के कानून से पूरी तरह से हटाए जाने के लिए नहीं निकलता है। यह केवल बनी हुई है जो अपनी सहायक कंपनी में ज्ञान और प्रवेश का सार बनाती है।

कला में विशिष्टता मानव जीवन और समाज के जीवन में एक आम, प्राकृतिक की कलात्मक छवियों में प्रकटीकरण की एक विधि है, लोगों के मनोवैज्ञानिक अनुभवों में और अद्वितीय और व्यक्ति की छवि के माध्यम से उनके रिश्ते में; कलात्मक और व्यक्तिगतकरण के सामान्यीकरण का एक संयोजन।

टाइपिंग की प्रक्रिया में, कलाकार आवंटित करता है और सबसे विशिष्ट वर्ग सुविधाओं, कार्यों और कार्यों, मनोवैज्ञानिक विशेषताओं, आदतों, स्वाद, जेस्चर, बाहरी संकेत, भाषण सुविधाओं का चयन करता है। कुछ गुणों और त्यागने और त्यागने की

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

इस उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया का आधार, दूसरों की पृष्ठभूमि में निर्वहन कलाकार का विश्वव्यापी है, वास्तविकता के लिए इसका सौंदर्य दृष्टिकोण। साथ ही, विशिष्ट कल्पना और कल्पना की मदद के साथ कलाकार, ठीक अभिव्यक्तिपूर्ण क्षमताओं और इस प्रकार की कला के विशिष्ट भौतिक उपकरणों का उपयोग करके, व्यक्तिगत, उज्ज्वल और मूल पात्रों के आकार में प्राप्त सामान्यीकरण का प्रतीक है और अभिनय करना विशिष्ट, अजीब परिस्थितियों में।[22]

टाइपिंग की इस दोहरी इकाई के सफल कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप, सामग्री में सही, उच्च विचार बनाना और कलात्मक कलाकृति पर सही बनाना संभव है। टाइपिंग के इन घटकों में से किसी को अनदेखा करना अनिवार्य रूप से कार्य की सामग्री के विरूपण की ओर जाता है, कलात्मक कौशल के स्तर में कमी के लिए, अपने कलात्मक रूप के विनाश को कमजोर और यहां तक कि अपने कलात्मक रूप का विनाश भी करता है।[23]

सामान्यीकरण और व्यक्तिगतकरण का अनुपात अंततः कलात्मक की विधि से निर्भर करता है। यथार्थवादी कला में, जहां विशेष रूप से चित्रित घटनाओं का सार प्रकट होता है, किसी विशेष, इन घटनाओं के मीडिया की व्यक्तिगत उपस्थिति के माध्यम से प्रकट होता है, टाइपिंग के दोनों तरफ एक दूसरे को इंटरपनेट्रेट करते हैं। इस आधार पर, निर्मित क्लासिक छवियां वैश्विक यथार्थवादी कला के प्रकार हैं - हैमलेट और डॉन क्विज़ोट, चैटकी और ओलोमोव, रेमब्रांड के नायकों और वी। आई। सर्कोव, फिल्म्स च। चैपलिन और एस एम। एसेनस्टीन। पूंजीपति की आधुनिक आधुनिकतावादी कला के विभिन्न दिशाओं में (अमूर्तता, क्यूबिज्म, अभिव्यक्तिवाद, अतियथार्थवाद, ताशकिज्म, प्राकृतिकता, आदि), सामान्यीकरण और व्यक्तिगतकरण, इसके विपरीत, विरोधी विरोधियों में परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे विशिष्टता का उल्लंघन होता है, और इसलिए कलात्मकता।

कलात्मक प्रकार का प्रकार (ग्रीक से। टाइपो एक छाप है, नमूना) - एक कलात्मक छवि, जिसकी व्यक्तिगत मौलिकता में विशेषताएं शामिल हैं, किसी विशेष सार्वजनिक समूह, वर्ग, राष्ट्र के प्रतिनिधियों की विशेषता, कई लोगों के विशिष्ट विशेषताओं की विशेषता है एक निश्चित ऐतिहासिक युग या यहां तक \u200b\u200bकि कई युग भी। उदाहरण के लिए, स्पेनिश कलाकार डी। वेलास्क्यूज़ के पोप निर्दोष एक्स के पोर्ट्रेट में, चरित्र की ऐसी विशेषताओं को चालाक, दुर्भावना, क्रूरता के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन यह सिर्फ इस व्यक्ति की विशेषताओं नहीं है: सामान्यीकरण की विशाल शक्ति में मदद मिली पोर्ट्रेट एक व्यक्ति के चित्र में खुलासा करने के लिए कलाकार एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सार को पोर्ट्रेट में पादरी की पूरी स्थिति, यानी एक विशिष्ट सामाजिक प्रकार बनाएं।

विशिष्ट व्यक्तित्व, उपस्थिति, विचारों और कार्यों में जिनमें से अधिकांश पूरी तरह से, उत्तल, केंद्रित हैं, लोगों के पूरे सर्कल की विशेषताएं निस्संदेह जीवन में मौजूद हैं। उनके कामों में वी.आई. लेनिन ने बार-बार "समूह और वर्ग के प्रकार" के अस्तित्व को नोट किया है। एक वास्तविक यथार्थवादी कलाकार में जीवन में मौजूदा प्रकारों को कुशलतापूर्वक नोटिस करने और उनके कलात्मक सामान्यीकरण में उनका उपयोग करने की क्षमता होती है। लेकिन अक्सर एक कलात्मक प्रकार वास्तव में मौजूदा व्यक्तित्व का प्रजनन नहीं होता है: उनकी अनूठी व्यक्ति कलाकार की कल्पना का फल है, रचनात्मक समझ, सामान्यीकरण और कई लोगों में निहित सुविधाओं और सुविधाओं की सांद्रता का परिणाम है।[24]

कलाकार द्वारा बनाए गए प्रकार का महत्व उन लक्षणों के सार्वजनिक महत्व पर निर्भर करता है जो एक सामान्य छवि में शामिल हैं, और काम में इसके परिणाम की कलात्मकता की डिग्री पर निर्भर करता है। कलाकार अपनी प्रकृति में एक विशेष प्रकार की महत्वपूर्ण घटनाओं में सामान्य बनाता है: उत्पन्न, समाज में पहले से फैल रहा है और निहित और मर रहा है, अपनी उम्र को परेशान करता है। छवियां जो घटनाओं के इन समूहों में से किसी एक को शामिल करती हैं, समान अधिकारों के साथ टाइपिक्स के लिए आवेदन कर सकते हैं। तो, कॉमेडी से चैटकी की छवि ग्रिबोएडोव "विट से माउंट" के रूप में, XIX शताब्दी के 20 के दशक के सबसे उन्नत लोगों की विशिष्ट विशेषताओं को व्यक्त करते हुए, मोल्चालिन की छवि की तुलना में कम विशिष्ट नहीं, प्रोटोटाइप जिसके लिए ग्रिबोएडोव्स्की समय में काफी वृद्धि हुई चैटकी के लिए से अधिक।

इसकी सामग्री पर कलात्मक प्रकार हमेशा ऐतिहासिक रूप से ठोस होता है। यह कलात्मक रचनात्मकता का "मिरर" है, जो उस युग को दर्शाता है जिसमें पीढ़ी अपने पूर्ववर्तियों के अपने चित्र और पोर्ट्रेट को देखती है। हालांकि, यह एक निश्चित सामाजिक परत के लोगों और एक निश्चित युग के लोगों के लिए विशिष्ट सुविधाओं के साथ विशिष्ट छवि के साथ हस्तक्षेप नहीं कर सकता है, सामान्य रूप से लोगों में अंतर्निहित विशेषताएं, सार्वभौमिक विशेषताओं में शामिल हैं। रोमियो और जूलियट वी। शेक्सपियर, डॉन क्विक्सोट एम। सर्वेंट्स और फॉस्ट I. वी। गोएथे, गोगोल हो ोगोव और गोंचारोवस्की ओब्लोमोव, सिक्स्टिन्स्काया मैडोना राफेल या डेविड मिशेलेंगलो, कविताओं के गीतात्मक हीरो ए। ए। ब्लोक या "लिटिल मैन" च। चैपलिन - ये सब और कई अन्य विश्व कला द्वारा बनाए गए प्रकारों को गहरी और शाश्वत सार्वभौमिक सुविधाओं के अपने युग की विशिष्ट ऐतिहासिक विशेषताओं के साथ शामिल किया गया।[25]

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

## निष्कर्ष

मनुष्य जिस तीव्र गति से उन्नति कर रहा है, उसी गति से उसके संबंध पीछे छूटते जा रहे हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की बढ़ती इच्छाओं के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। माता-पिता बड़ी लगन से अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। परिवार में लड़कियां हैं, तो वे विवाह के पश्चात ससुराल चली जाती हैं और लड़के नौकरी की खोज में बड़े शहरों में चले जाते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था में माता-पिता अकेले रह जाते हैं। इसी प्रकार शहरों में उनके बेटे भी अकेले हो जाते हैं। संयुक्त परिवार टूटने के कारण एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण संबंध टूट रहे हैं। संयुक्त परिवारों में बहुत से रिश्ते होते थे। दादा-दादी, ताया-ताई, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, नाना-नानी, मामा-मामी, मौसी-मौसा तथा उनके बच्चे अर्थात बहुत से भाई-बहन। बच्चे बचपन से ही इन सभी संबंधों को जानते थे, परन्तु अब एकल परिवारों में माता-पिता और उनके दो या एक बच्चे ही हैं।[23]

संयुक्त परिवार टूटने के अनेक कारण हैं। रोजगार के अतिरिक्त परिवार के सदस्यों में बढ़ते मतभेद, कटुता एवं स्वार्थ आदि के कारण भी एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति नितांत अकेला पड़ता जा रहा है। संयुक्त परिवार में समस्याएं सांझी होती थीं। व्यक्ति किसी कठिनाई या समस्या होने पर परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श कर लेता था। इस प्रकार उसे समस्या का समाधान घर में ही मिल जाता था।

संयुक्त परिवार के बहुत से लाभ हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य की सुरक्षा का दायित्व सबका होता है। किसी भी सदस्य की समस्या पूरे परिवार की होती है। यदि किसी को पैसे आदि की आवश्यकता है, तो पैसे बाहर किसी से मांगने नहीं पड़ते। परिवार के सदस्य ही मिलजुल कर सहयोग कर देते हैं। परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण घर और बाहर के कार्यों का विभाजन हो जाता है।[24]

प्रत्येक सदस्य अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य कर लेता है तथा अन्य कार्यों से मुक्त रहता है। ऐसे में उसे अपने लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार में रसोई एक होने के कारण खर्च भी कम हो जाता है। उदाहरण के लिए दो या तीन एकल परिवार यदि संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं, तो उन्हें अधिक सामान की आवश्यकता होगी।

थोक में अधिक सामान लेने पर वह सस्ता पड़ता है। इसी प्रकार तीन के बजाय एक ही फ्रिज से काम चल जाता है। ऐसी ही और भी चीजें हैं। परिवार के किसी सदस्य के बीमार होने पर उसकी ठीक से देखभाल हो जाती है। परिवार के सदस्य साथ रहते हैं, तो उनमें भावनात्मक लगाव भी बना रहता है। इसके अतिरिक्त बच्चों का पालन-पोषण भी भली-भांति आसानी से हो जाता है। उनमें अच्छे संस्कार पैदा होते हैं। वे यह भी सीख जाते हैं कि किस व्यक्ति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। इसमें बड़ों का सम्मान करना, अपनी आयु के लोगों के साथ मित्रवत व्यवहार करना तथा छोटों से स्नेह रखना आदि सम्मिलित हैं।

आज परिस्थितियां पृथक हैं। मनुष्य किसी भी कठिनाई या किसी संकट के समय स्वयं को अकेला ही पाता है। यदि परिवार में महिला का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो तब भी उसे घर का सारा कार्य स्वयं करना पड़ता है, जबकि संयुक्त परिवार में अन्य महिलाएं होने के कारण उसे आराम करने का समय मिल जाता था। साथ ही उसकी भी उचित प्रकार से देखभाल भी हो जाती थी।[25]

एकल परिवार में अकेले पड़ जाने के कारण व्यक्ति अवसाद का शिकार हो जाता है। अवसाद एक मानसिक रोग है। इस अवस्था में व्यक्ति स्वयं को निराश अनुभव करता है। वह स्वयं को अत्यधिक लाचार समझने लगता है। ऐसी स्थिति में प्रसन्नता एवं आशा उसे व्यर्थ लगती है। वे अपने आप में गूम रहने लगता है। वह किसी से बात करना पसंद नहीं करता। हर समय चिड़चिड़ा रहता है। यदि कोई उससे बात करने का प्रयास करता है, तो वे क्रोधित हो जाता है। कभी वह उसके साथ असभ्य अथवा उग्र व्यवहार भी करता है। मनोचिकित्सकों के अनुसार अवसाद के भौतिक कारण भी होते हैं, जिनमें आनुवांशिकता, कुपोषण, गंभीर रोग, नशा, कार्य का बोझ, अप्रिय स्थितियां आदि प्रमुख हैं। अवसाद की अधिकता होने पर व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है। अवसाद के कारण आत्महत्या करने के अप्रिय समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। ऐसे विचलित करने वाले समाचार भी मिलते हैं कि अमुक व्यक्ति ने सपरिवार आत्महत्या कर ली या परिवार के सदस्यों की हत्या करने के पश्चात स्वयं भी आत्महत्या कर ली। मनोचिकित्सकों के अनुसार अवसाद से निकलने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने परिजनों एवं मित्रों के साथ समय व्यतीत करे। किसी भी समस्या या संकट के समय परिजनों से बात करे। स्वयं को अकेला न समझे। सकारात्मक

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrsetm.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 9, September 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0909032 |

विचारों वाले व्यक्तियों से बात करे। परिजनों को भी चाहिए कि वे अवसादग्रस्त लोगों में सकारात्मक विचार पैदा करने का प्रयास करें, उन्हें अकेला न छोड़ें, क्योंकि ऐसे लोग आसानी से अपराध की ओर अग्रसर हो सकते हैं। उन्हें उनकी किसी भी नाकामी के लिए तानें न दें, अपितु उनको प्रोत्साहित करें तथा उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएं।[24]

वास्तव में आज तकनीकी ने समस्त संसार के लोगों को जितना समीप कर दिया है, उतना ही एक-दूसरे से दूर भी कर दिया है। मोबाइल के माध्यम से व्यक्ति क्षण भर में विदेश में बैठे व्यक्ति से भी बात कर लेता है। परन्तु मोबाइल के कारण ही लोगों को परिवार के सदस्यों से बात करने का समय नहीं मिल पाता। प्रत्येक स्थान पर लोग अपने मोबाइल के साथ व्यस्त दिखाई देते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति का अकेलापन बढ़ता जा रहा है। व्यक्ति व्यक्ति से दूर होता चला जा रहा है। आवश्यकता है सामूहिक संवाद की प्रत्यक्ष संवाद मन से भाव से विचार से हमे जोड़ता है दुख:सुख में सहायक होकर साथ होने की अनुभूति प्रदान करता है।[25]

## संदर्भ

1. पाल हान्ले फर्मे- अनुवाद, समाजशास्त्र का क्षेत्र एवं पद्धति- हरिश्चंद्र उप्रेती, पृ. 821
2. प्रेमचंद- गोदान, पृ. 13
3. शशिप्रभा शास्त्री- क्योंकि, पृ. 41
4. वही ,पृ. 48
5. शिवानी- चौदेह फेरे, पृ. 51
6. नासिरा शर्मा- शाल्मली, पृ 155-156
7. कुसुम अंसल –अपनी-अपनी यात्रा,पृ.47
8. मृदुला गर्ग -मैं और मैं, पृ. 3
9. सिम्मी हर्षिता- संबंधों के किनारे, पृ 219-220
10. मंजुल भगत- टूटता हुआ इंद्रधनुष, पृ.34
11. मंजुल भगत- अनारो, पृ. 104
12. डॉ. सुधा श्रीवास्तव- बियाबान में उगते त्रिशंकु, पृ. 86
13. गीतांजलि श्री- माई, पृ. 61
14. दिनेशनंदिनी डालमिया-आंखमिचौली, पृ. 220
15. वही, पृ. 220
16. उषादेवी 'मित्रा'- नीड़, 191
17. मेहरुन्निसा परवेज- अकेला पलाश, पृ.152
18. चंद्रकांता- यहां विस्तृता बहती है, पृ. 59
19. मन्नू भंडारी- आपका बंटी, पृ 35-36
20. सुधीश पचैरी, उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996 ई., पृ.-96.
21. संजीव, रह गई दिशाएं इसी पार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ.-169.
22. वहीं, पृ.-221.
23. वहीं, पृ.-163.
24. वहीं, पृ.-138.
25. वहीं, पृ.-303.

Impact Factor:
7.580


# INTERNATIONAL JOURNAL
## OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com